तापमान
अधिकतम 34 .5 डिग्री
न्यूनतम 16 .2 डिग्री

हरिभूमि
हिसार भूमि
रोहतक, रविवार, 13 अप्रैल 2025

9 वीआईपी कल्चर जहां हैं, वहां भक्ति नहीं : डॉ. स्वामी उमानंद

10 महात्मा ज्योतिबा फुले स्पोर्ट्स समिति बनी ऑलओवर चैंपियन

खबर संक्षेप

मंत्री गोयल को जमीन देने के लिए सौंपा ज्ञापन

हिसार। विभिन्न संस्थाओं से जुड़े प्रमुख समाजसेवी एवं अग्रवाल वैश्य समाज हिसार के जिला अध्यक्ष ललित बंसल की अध्यक्षता में कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल का अभिनंदन किया गया व अग्रवाल समाज के मध्यमवर्गीय एवं गरीब छात्र-छात्राओं के छात्रावास के लिए जमीन उपलब्ध करवाने के लिए मांग पत्र दिया। इस मौके पर उनके साथ महाराजा अग्रसेन प्रचार प्रसार सेवा ट्रस्ट के प्रधान आत्मा राम गर्ग, दीपक गुप्ता महम, राजेश बंसल, मुनीश बंसल, रिंकू बंसल, सुमित बंसल सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

अध्यापक संघ का प्रदर्शन 16 को

हिसार। सर्व कर्मचारी संघ हरियाणा से संबंधित हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ की ऑनलाइन मीटिंग जिला प्रधान प्रमोद जांगड़ा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। मीटिंग में जिला कमेटी के सदस्य जिला सचिव विनोद प्रभाकर, वरिष्ठ उप प्रधान सुमन देवी, उप प्रधान वीरेंद्र सिंह, वित्त सचिव विजेंद्र सिंह, सह सचिव भूपेंद्र सिंह ने बताया कि शिक्षा विभाग द्वारा प्रतिदिन अध्यापक डायरी ऑनलाइन अंकित करने को लेकर तुगलकी फरमान जारी किया है। इसके खिलाफ अध्यापक संघ 16 अप्रैल को जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन करेगा।

संत कबीर चौपाल में शेड का किया उद्घाटन

हिसार। लोक निर्माण एवं जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने गांव कैमरी स्थित संत कबीर चौपाल में 10 लाख रुपये की लागत से निर्मित शेड का विधिवत उद्घाटन किया। कैबिनेट मंत्री ने स्थानीय लोगों से संवाद किया और सरकार द्वारा चलाए जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। इस मौके पर पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा, पार्षद जयप्रकाश, देवेंद्र सैनी, सुरेंद्र जांगड़ा, पूर्व सरपंच वीना सैनी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

साम्राज्यवाद पर वैचारिक सेमिनार का आयोजन

बरवाला। जनवादी लेखक संघ, डेमोक्रेटिक फोरम, दलित अधिकार मंच के सांझा बैनर तले बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर, महात्मा ज्योतिबा फुले, सफदर हाशमी की जयंती एवं जलियांवाला बाग हत्याकांड की विरासत पर एक वैचारिक सेमिनार का आयोजन किया गया। इसका विषय राजकीय पूंजीवाद के अधिनायकत्व में उभर रहे, साम्राज्यवाद व साम्प्रदायिक विघटन के खतरे। इस सेमिनार के मुख्य वक्ता जयपाल अंबाला रहे और अध्यक्षता मास्टर रोहतास बहबलपुर, मोहनलाल जेई, रोहतास राजली एवं सुशीला बहबलपुर ने संयुक्त रूप से की और संचालन सरदानन्द राजली एवं नसीब खान ने संयुक्त रूप से किया।

प्रधानमंत्री के प्रस्तावित कार्यक्रम को लेकर तैयारियां अंतिम चरण में

हिसार से अयोध्या के लिए वाणिज्यिक उड़ान को पीएम मोदी दिखाएंगे हरी झंडी

- एसपीजी ने रिहर्सल कर पीएम मोदी के स्टेज का आकार कम कराया

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती के अवसर पर हिसार में आएंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी हिसार से अयोध्या के लिए वाणिज्यिक उड़ान को हरी झंडी दिखाएंगे और हिसार हवाई अड्डे के नए टर्मिनल भवन की आधारशिला रखेंगे। इसके बाद प्रधानमंत्री एयरपोर्ट गेट के पास एक रैली को संबोधित करेंगे। उधर, प्रधानमंत्री मोदी के प्रस्तावित दौरे को लेकर तैयारियां अंतिम चरण में है। शनिवार को एसपीजी ने पीएम मोदी के कार्यक्रम को देखते मोर्चा संभाल दिया और एयरपोर्ट परिसर समेत रैलीस्थल पर रिहर्सल की। इस दौरान एसपीजी ने रैलीस्थल पर पीएम के लिए बनाई गई स्टेज के साइज पर आपत्ति जताई और उसका आकार कम करने के आदेश दिए। बता दें कि स्थानीय अधिकारियों ने पहले पीएम मोदी के लिए बड़े आकार में स्टेज तैयार कराई थी। स्टेज पहले 48 गुणा 90 फीट साइज की स्टेज तैयार की गई थी, लेकिन एसपीजी के एतराज के बाद अब 32 बाई 90 फीट में स्टेज तैयार किया जा रही है। नई स्टेज रविवार दोपहर तक तैयार हो जाएगी। इस स्टेज को नए सिरे से तैयार करने के लिए 150 से अधिक कर्मचारियों को लगाया गया है। मोदी की स्टेज की ऊंचाई 9 फीट रहेगी।

होर्डिंग्स से अटा शहर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली को देखते एयरपोर्ट की तरफ जाने वाले रास्ते होर्डिंग्स से अटे पड़े हैं। एयरपोर्ट से करीब तीन किलोमीटर तक सभी सड़क मार्गों पर प्रधानमंत्री और सीएम के होर्डिंग्स लगाए गए हैं। रैली स्थल के आसपास बडे.साइज के होर्डिंग्स लगाए हुए।

बस लेकर जाएगी एयरपोर्ट

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय में पहुंचे यात्रियों की पहले स्क्रीनिंग होगी। इसके बाद एक विशेष बस उन्हें लेकर एयरपोर्ट जाएगी। अधिकारियों ने ऐसा इसलिए भी किया है कि एक तो यात्रियों की स्क्रीनिंग अलग स्थान पर पहले हो जाएगी और दूसरे प्रधानमंत्री के कार्यक्रम के चलते यात्रियों को परेशानी भी नहीं होगी।

किराया और शेड्यूल तय

अयोध्या व दिल्ली के लिए किराया भी तय कर दिया है। इसके तहत अयोध्या जाने के लिए 3200 रुपये से किराया शुरू हो जाता है। इसी तरह दिल्ली जाने के लिए 1300 रुपये से किराया शुरू हो जाता है। अयोध्या और दिल्ली के लिए सोमवार और शुक्रवार दो दिन फ्लाइट चलेगी। अयोध्या के लिए समय सुबह 10.30 बजे हैं और दिल्ली जाने वाली फ्लाइट हिसार से दोपहर 3.25 बजे चलेगी जो 40 मिनट में शाम 4:05 बजे दिल्ली पहुंचेगी।

हिसार। रैली स्थल पर सघन जांच करते सुरक्षा कर्मी। फोटो : हरिभूमि

अयोध्या जाने वाले यात्रियों को गुजवि बुलाया

हरियाणा के पहले एयरपोर्ट से 14 अप्रैल को अयोध्या जाने वाले यात्रियों की यहां के गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय में स्क्रीनिंग होगी। इसके लिए यात्रियों को विश्वविद्यालय आने के निर्देश दिए गए हैं। अयोध्या जाने वाली इस फ्लाइट को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। सुबह 10.30 बजे चलने वाली यह फ्लाइट दो घंटे बाद 12.30 बजे अयोध्या पहुंच जाएगी। ऐसे में विभागीय अधिकारियों द्वारा यात्रियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे पहले एयरपोर्ट की बजाय गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में पहुंचे, जहां उनकी स्क्रीनिंग होगी। अयोध्या के लिए टिकट बुक करवाने वाले संयम कहना है कि अधिकारियों ने उन्हें स्क्रीनिंग के लिए जीजेयू जाने को कहा है। अभी अधिकारियों ने समय फाइनल नहीं किया है लेकिन शीघ्र ही समय भी बता दिया जाएगा।

मोदी के साथ बैठने वालों के नाम फाइनल नहीं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ कौन-कौन मंच पर बैठेगा। इसको लेकर अभी नामों की सूची फाइनल नहीं हुई है। मंच पर मोदी के साथ प्रदेश के सीएम नायब सिंह सैनी, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहनलाल बड़ोली, नागरिक उड्डयन मंत्री विपुल गोयल, पीडब्ल्यूडी मंत्री रणबीर गंगवा को स्थान मिलेगा। हालांकि नामों की फाइनल सूची पीएमओ द्वारा की जाएगी। मोदी की स्टेज के पीछे बड़े साइज की एलईडी भी लगाई जाएगी, जिस पर आयोजन को लाइव दिखाया जाएगा। इसके अलावा रैली स्थल पर और भी एलईडी लगाई जा रही है, ताकि दूर तक लाइव प्रसारण लोग देख सकें। रैली स्थल को अलग-अलग सेक्टरों में बांटा गया है। महिला-पुरुष के अलावा वीआईवी सेक्टर बनाए गए हैं।

एसपीजी ने संभाला सुरक्षा मोर्चा

प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का एसपीजी ने सुरक्षा मोर्चा संभाल लिया है। रैली स्थल पर बनाए गए पंडाल में करीब 45 हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई है। रैली में 10 जिलों से लोगों पहुंचेंगे। रैली में आने वाले लोगों को प्रशासन की तरफ से खाना वितरित किया जाएगा। प्रशासन ने रैली स्थल पर बनाए गए सेक्टर पर अलग-अलग ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्ति किए हैं। रैली में पहुंचने वाले वाहनों को देखते प्रशासन ने पार्किंगस स्थल तैयार किए है। वाहनों के लिए पुलिस लाइन और कुरुक्षेत्र गोशाला में पार्किंग स्थल बनाए गए हैं।

सीएम सैनी आज पहुचेंगे हिसार

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी रविवार को हिसार पहुचेंगे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम की तैयारियों को अंतिम रूप देंगे। प्रधानमंत्री के कार्यक्रम को दूरदर्शन पर प्रसारित किया जाएगा। प्रधानमंत्री के साथ केंद्रीय नागर विमानन मंत्री राममोहन नायडू किंजराजू, राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल, प्रदेश के नागर विमानन मंत्री विपुल गोयल, कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा सहित अन्य नेता मौजूद रहेंगे। मोदी आयोजन स्थल पर बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर को श्रद्धांजलि देंगे और प्रदेश के सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का भी अवलोकन करेंगे। इस दौरान मोदी को हवाई अड्डे का मॉडल भी दिखाया जाएगा।

नए टर्मिनल भवन पर आएगी 410 करोड़ की लागत

हवाई यात्रा को सुरक्षित, किफायती और सर्व-सुलभ बनाने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, प्रधानमंत्री हिसार में महाराजा अग्रसेन हवाई अड्डे के नए टर्मिनल भवन की आधारशिला रखेंगे। इसकी लागत 410 करोड़ रुपये से अधिक होगी। इसमें एक अत्याधुनिक यात्री टर्मिनल, एक कार्गो टर्मिनल और एक एटीसी भवन शामिल होगा। प्रधानमंत्री हिसार से अयोध्या के लिए पहली उड़ान को भी हरी झंडी दिखाएंगे। हिसार से अयोध्या (सप्ताह में दो बार) के लिए निर्धारित उड़ानों और जम्मू, अहमदाबाद, जयपुर तथा चंडीगढ़ के लिए सप्ताह में तीन उड़ानों के साथ यह उपलब्धि हरियाणा की विमानन कनेक्टिविटी में एक महत्वपूर्ण छलांग होगी।

किसानों की फसलों को पहुंचा नुकसान, मुआवजा दे सरकार

हिसार। कांग्रेस नेता एवं पूर्व वित्त मंत्री संपत सिंह ने हरियाणा में बेमौसमी बारिश, तूफान व ओलावृष्टि से बर्बाद फसलों का मुआवजा देने की सरकार से मांग की है। उन्होंने कहा कि शुक्रवार को तूफान व ओलावृष्टि से किसान की पकी फसल गेहूं व सरसों में भारी नुकसान हुआ है। संपत सिंह ने कहा कि हिसार सिरसा व रोहतक आदि में ओले गिरने से किसान की फसलों को एवं सब्जी की खेती करने वाले किसानों के चेहरे पर मायूसी छा गई है। इस मौसम में किसान की फसल पककर तैयार हो जाती है। कटाई का मौसम चल रहा है। पूरा खर्चा फसल पर लग चुका है। किसानों ने अपनी फसल मंडी में खुले मैदान में बिक्री के लिए रखी है। मंडियों में पड़ा अनाज भीग गया है। किसान की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर हो गई है। ऊपर से मौसम की मार पड़ी है। संपत सिंह ने कहा कि सरकार को विशेष गिरदावरी करवा कर किसानों को तुरंत राहत प्रदान करनी चाहिए किसानों को प्रति एकड़ 50 हजार रुपये मुआवजा देने की मांग की है।

ओलावृष्टि से गेहूं व सरसों में भारी नुकसान

बालसमंद नहर में दो दिन के लिए छोड़ा पानी

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

पानी की किल्लत झेल रहे शहरवासियों तथा आसपास के ग्रामीणों के लिए राहत भरी खबर है। बालसमंद नहर में दो दिन के लिए पानी की सप्लाई छोड़ दी गई है। नहर में पानी आने से जनस्वास्थ विभाग के जलघरों में पानी पहुंच पाएगा और लोगों को पेयजल के लिए झेलने पड़ रही किल्लत से राहत मिलेगी। बता दें कि करीब 25 दिन के लिए नहर बंदी चल रही है और 20 अप्रैल के बाद खनौरी हैड से पानी छोड़ा जाना था, लेकिन हिसार शहर और आसपास के गांव में पेयजल का गंभीर संकट बन हुआ है। ऐसे में स्पेशल डिमांड पर बालसमंद नहर में पानी छोड़ गया है।

- पेयजल के गंभीर संकट से राहत मिलने की उम्मीद

उधर, मेयर प्रवीण पोपली ने शहर में पेयजल संकट को देखते सिंचाई विभाग के अधिकारियों से बात की थी। पोपली ने कहा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी लगभग 25 दिन के लिए नहर में पानी की सप्लाई को रोका गया है। दो 2 दिन के लिए नहर में पानी की सप्लाई चलाई जाए जिससे शहर के जलघरों में बने टैंक में पानी एकत्रित हो जाए। ताकि शहर में पीने के पानी की सप्लाई सुचारू रूप से चल सके। मेयर प्रवीण पोपली के प्रयासों से अधिकारियों ने उनकी बात मानते हुए कहा कि अगले दो दिन में नहर में पानी चलाया जाएगा। पोपली ने कहा कि अब दो दिन 13 और 14 अप्रैल को नहर में पानी आएगा जिसे जलघर के टैंक भर जाएंगे। शहर में पीने के पानी की कोई दिक्कत नहीं आने दी जाएगी।

हिसार। नहर में छोड़ा गया पानी। फोटो : हरिभूमि

डॉ. प्रभुदयाल के निलंबन के विरोध में चिकित्सकों की हड़ताल

- दो घंटे हड़ताल करके जताया विरोध
- हड़ताल से मरीज हुए परेशान

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

पीएनडी के नोडल अधिकारी डॉ. प्रभुदयाल को निलंबित किए जाने के विरोध में जिले के नागरिक अस्पताल में चिकित्सक हड़ताल पर रहे। चिकित्सकों की हड़ताल के चलते मरीज ओपीडी में बैठक इंतजार करते रहे और उन्हें भारी परेशानी झेलनी पड़ी।

पीएनडीटी के नोडल अधिकारी डॉ. प्रभु दयाल को निलंबित किए जाने के विरोध में सरकारी अस्पताल के डाक्टरों ने शनिवार को दो घंटे हड़ताल की। नागरिक अस्पताल के चिकित्सक हरियाणा सिविल मेडिकल सर्विसेज एसोसिएशन के आह्वान पर सुबह 2 घंटे 10 से 12 बजे तक हड़ताल पर रहे। हड़ताल के चलते चिकित्सक नागरिक अस्पताल के सीएमओ कार्यालय के सामने एकत्रित हुए और डॉ. प्रभु दयाल को सस्पेंड करने का विरोध जताया। डॉक्टर प्रभुदयाल के नेतृत्व में हिसार में लिंगानुपात में बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2015 में लिंग अनुपात 886 था, लेकिन अब बढ़ कर 916 पर पहुंच गया है।

चिकित्सकों की हड़ताल के कारण मरीजों को परेशानी उठानी पड़ी। नागरिक अस्पताल में नेत्र विभाग, गायनी और फिजिशियन ओपीडी में मरीजों की भीड़ लगी रही। इसके अलावा अन्य ओपीडी में मरीजों की भीड़ लगी रही, हालांकि बच्चों की ओपीडी और अन्य ओपीडी में जहां एनएचएम के डॉक्टर रहे, जहां चिकित्सकों ने मरीजों की जांच की।

हड़ताल के कारण मरीजों को इंतजार करना पड़ा। पीएनडीटी विभाग के नोडल अधिकारी डॉ. प्रभु दयाल को अतिरिक्त मुख्य सचिव ने तीन दिन पूर्व सस्पेंड कर दिया था। विभाग इस मामले की जांच की बात कह रहा है।

हिसार। चिकित्सकों की हड़ताल के चलते ओपीडी में इंतजार करते मरीज।

बिल के रुपये मांगने पर हॉकर से मारपीट, दो दांत टूटे, जबड़ा हिला

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

हांसी में अखबार बांटने वाले हॉकर के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। मारपीट किए जाने से घायल मुल्तान कॉलोनी निवासी अमन को परिजनों द्वारा उपचार के लिए नागरिक अस्पताल में भर्ती करवाया गया है जहां उसका इलाज किया जा रहा है। सूचना मिलने पर पुलिस ने नागरिक अस्पताल पहुंच घायल अमन के बयान दर्ज कर जांच आरंभ कर दी है।

पुलिस को दिए बयान में अमन ने बताया कि उसके घर की माली हालत ठीक नहीं है और परिवार की सहायता करने के लिए वह पढ़ाई के साथ-साथ पार्ट टाइम घर-घर अखबार बांटने का काम करता है। शनिवार को वह अखबार देने के साथ पिछले महीने के बकाया बिल भी ले रहा था। अमन ने बताया कि जगदीश कॉलोनी के रहने वाले संजय के घर भी उसने बिल दिया। अमन ने कहा कि इस महीने हैंडलिंग चार्ज का 10 रुपये रेट बढ़ा दिया है। इसी बात से संजय नाराज हो गया और मेरे साथ मारपीट करने लग गया।

अमन का आरोप है कि मारपीट में संजय का पुत्र भी शामिल हो गया और वह घर के अंदर से डंडा निकाल लाया और हाथ पांव पर डंडे मारे। बेटे द्वारा की गई मारपीट में उसके जबड़े में चोट आई है और दो दांत टूट गए। अमन दो बहनों का इकलौता भाई है और परिवार की मदद करने के लिए पार्ट टाइम अखबार बांटने का काम करता है।

- हैंडलिंग चार्ज बढ़ाने से नाराज था व्यक्ति, गर्दन पकड़ कर दी जान से मारने की धमकी

आंधी में टूटे पेड़ से बचकर निकलने के प्रयास में हादसा

- बाइक सवारों को कार ने मारी टक्कर, एक की मौत, दूसरा घायल

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

निकटवर्ती गांव भाटला के समीप आंधी की वजह से टूट कर सड़क पर गिरे पेड़ से बच कर निकल रहे बाइक सवारों को पीछे से आ रही एक कार ने टक्कर मार दी। जिससे बाइक पर सवार एक अधेड़ की मौत हो गई तथा दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। आस-पास के लोगों व राहगीरों ने दोनों को उपचार के लिए नागरिक अस्पताल पहुंचाया जहां चिकित्सकों महजत निवासी 53 वर्षीय सत्तीया को मृत घोषित कर दिया जबकि गंभीर रूप से घायल 32 वर्षीय नरेश को प्राथमिक उपचार के बाद हिसार रेफर कर दिया, लेकिन परिजनों ने उसे हांसी के निजी अस्पताल में भर्ती करवाया है। सूचना मिलने पर भाटला पुलिस पुलिस ने नागरिक अस्पताल पहुंच शव को अपने कब्जे में लेकर मृतक के भाई के बयान पर अज्ञात गाड़ी चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने तथा गैर इरादतन हत्या की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर शव का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सौंप मामले की जांच शुरू कर दी है।

नागरिक अस्पताल में मौजूद महजत गांव के सरपंच दीपक ने बताया कि सत्तीया व नरेश कुतुबपुर गांव स्थित एक खंभा फैक्ट्री में काम करते थे और शुक्रवार शाम को ड्यूटी समाप्त कर अपने बाइक पर सवार होकर वापस अपने गांव महजत लौट रहे थे।

सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने जेसीबी की मदद से शैटरिंग हटा पानी के बहाव को किया सुचारू

लोक निर्माण विभाग के ठेकेदार की लापरवाही की वजह से टूट जाती नहर

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

पेटवाड़ डिस्ट्रीब्यूटरी पर उमरा रोड पर पुल निर्माण के द्वारा ठेकेदार की लापरवाही बरते जाने का मामला प्रकाश में आया। सिंचाई विभाग के अधिकारियों द्वारा ठेकेदार व पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को नहर में पानी आने की सूचना दिए जाने के बाद भी नहर के अंदर पुल निर्माण के लिए की गई शैटरिंग को हटाया नहीं गया।

शुक्रवार शाम को आई आंधी की वजह व नहर में बहकर आए कूड़े कचरे के शैटरिंग में फंस जाने की वजह से नहर में पानी का बहाव अवरुद्ध हो गया तथा नहर में पीछे पानी बढ़ने लगा और पानी नहर के किनारे पर पहुंच गया। नहर के टूटने का खतरा मंडराने लगा। इस दौरान नहर के आसपास खेतों में रहने वाले लोगों ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को नहर में पानी बढ़ने की जानकारी दी।

इसके बाद सिंचाई विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे और उमरा रोड स्थित निर्माणाधीन पुल के नीचे लगाई शैटरिंग व उसमें फंसे कूड़े कर्कट को जेसीबी मशीन की मदद बाहर निकाल पानी के बहाव ठीक किया। अन्यथा अगर नहर टूट जाती तो बड़ा हादसा हो सकता था।

बता दें कि लोक निर्माण विभाग द्वारा उमरा रोड पर पेटवाड़ डिस्ट्रीब्यूटरी पर पुल बनाने का कार्य किया जा रहा है और पुल निर्माण के लिए ठेकेदार द्वारा नहर के अंदर शैटरिंग की गई थी लेकिन शुक्रवार को पेटवाड़ डिस्ट्रीब्यूटरी में पानी आने से पहले सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को नहर में पानी आने की सूचना दी गई थी लेकिन ठेकेदार द्वारा की गई शैटरिंग को हटाया नहीं गया और न ही शैटरिंग में फंसने वाले कचरे को निकालने की कोई व्यवस्था की गई। इसके कारण नहर में बह कर आया कूड़ा कचरा शैटरिंग में फंस गया और नहर में बंध लग गया। जिस कारण नहर में पानी की रुकावट हो गई। पानी का भाव ज्यादा होने के कारण नहर में लगी शैटरिंग भी ध्वस्त हो गई। और नहर में पीछे करीब 6 फुट पानी एकत्रित हो गया। नहर के ओवरफ्लो होने की सूचना मिलने पर देर रात सिंचाई विभाग के एसडीओ गोल्डी शर्मा, जेई रविन्द्र, जेई संकेत अपने फील्ड कर्मचारियों के साथ नहर पर पहुंचे और निर्माणाधीन पुल के नीचे फंसे कूड़े कर्कट को निकलवाने के लिए जेसीबी मशीन बुलाई।

हांसी। पेटवाड़ डिस्ट्रीब्यूटरी पर निर्माणाधीन पुल के नीचे फंसे कचरे को बाहर निकालती जेसीबी। फोटो : हरिभूमि

हो सकता था बड़ा हादसा

जेई संकेत ने बताया कि उन्होंने लोकनिर्माण विभाग के जेई व ठेकेदार को पहले ही बता दिया था कि नहर में पानी आने वाला है इसलिए नहर में की गई शैटरिंग को हटा लो मगर लोक निर्माण विभाग के जेई व ठेकेदार ने उनकी कोई सुनवाई नहीं की जिस कारण शुक्रवार को पूरी रात जेसीबी की सहायता से नहर से कचरा बाहर निकाला गया। अगर समय रहते नहर को नहीं संभाला जाता तो नहर टूट जाती और नहर के साथ बने बिजली घर व अन्य एरिया में पानी भर सकता था जिससे बड़ा हादसा हो सकता था।

रिटायरमेंट पर तीन करोड़ चाहिए, तो ऐसे करें निवेश

सुझाव | बिजनेस डेस्क

- कुछ निवेश की स्कीम आपको बना सकती हैं धनवान
- हर कोई बना सकता है रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड
- एनपीएस और म्यूचुअल फंड निवेश के बेहतर विकल्प

क्या आप चाहते हैं कि जब आप अपनी नौकरी से रिटायर हों तो आपके पास कम से कम 3 करोड़ रुपये की रकम जरूर हो। यानी रिटायरमेंट फंड 3 करोड़ रुपये हो, ताकि आप बाकी की जिंदगी आराम से गुजार सकें और अपने खर्चों को मेंटेन कर सकें। इसके लिए आपको कई स्कीम में निवेश करना होगा। बेहतर होगा कि निवेश का प्लान जल्दी से जल्दी बना लिया जाए। अगर आपकी उम्र अभी 35 साल है तो भी अगले 25 साल में आप 3 करोड़ रुपये का रिटायरमेंट फंड इकट्ठा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि आप किस तरह की रणनीति बनाएं कि 25 साल में 3 करोड़ रुपये का फंड जुटा सकें और बुढ़ापे को आराम से काट सकें।

एक उदाहरण ऐसे समझें रणनीति

मान लिजिए एक्स की उम्र अभी 35 साल है। उसका लक्ष्य है कि वह 10 साल में 20 लाख रुपये जमा करें। साथ ही अगले 25 साल में 3 करोड़ रुपये का रिटायरमेंट फंड बनाए। एक्स ने अपने लक्ष्य को पाने के लिए कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। वह पहले से ही नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में योगदान कर रहे हैं। अब वह हर महीने 20,000 रुपये म्यूचुअल फंड में लगाना चाहते हैं। हालांकि एक्स जानना चाहते हैं कि वह रकम को और कहां निवेश कर सकते हैं। जिससे उसके पैसे से मोटा पैसा बनाया जा सके।

क्या है एक्सपर्ट की राय

बाजार के जानकारों का कहना हहै कि एक्स अभी एम्प्लॉयर-एम्प्लॉई स्कीम में योगदान कर रहे हैं। इसका मतलब है कि वह अपनी सैलरी से 10% योगदान करते हैं और एम्प्लॉयर 14% योगदान करते हैं। अभी वह हर महीने 15,000 रुपये निवेश कर रहे हैं। अगर सैलरी में हर साल 7% की बढ़ोतरी होती है और उसी के अनुसार योगदान भी बढ़ता है। ऐसे में 10% सीएजीआर (सीएजीआर) के हिसाब से उनका एनपीएस निवेश 25 साल में करीब 3.42 करोड़ रुपये तक बढ़ सकता है। सीएजीआर का मतलब है सालाना चक्रवृद्धि ब्याज दर। चक्रवृद्धि ब्याज ही एक ऐसा उपाय है जो आपको कम समय में अमीर बना सकता है।

एनपीएस में इस बात का रखें ध्यान

एनपीएस में निवेश के जरिए वह रिटायरमेंट पर 3 करोड़ रुपये का फंड पा सकते हैं। हालांकि, यह ध्यान रखना जरूरी है कि एनपीएस फंड का केवल 60% ही रिटायरमेंट के समय एकमुश्त निकाला जा सकता है। बाकी 40% का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने के लिए किया जाना चाहिए। एन्युटी का मतलब है कि आपको हर महीने एक निश्चित राशि मिलती रहेगी।

म्यूचुअल फंड से कितनी मिलेगी रकम

एक्स एनपीएस के अलावा हर महीने 20,000 रुपये म्यूचुअल फंड में भी निवेश करने की योजना बना रहे हैं। अगर 12% का सालाना रिटर्न मान लें तो 10 साल में उनके पास करीब 45 लाख रुपये का फंड इकट्ठा हो जाएगा। ऐसे में वह इस रकम का इस्तेमाल अपने किसी जरूरी काम में कर सकते हैं। वहीं अगर वह इस एसआईपी को पूरे 25 साल तक जारी रखते हैं तो वह इतने समय में करीब 3.40 करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा कर लेंगे। यानी रिटायरमेंट पर उन्हें जितनी रकम मिलेगी, करीब उतनी रकम वह एसआईपी में निवेश से भी ले सकेंगे। ऐसे में वह रिटायरमेंट पर कुल करीब 7 करोड़ रुपये का फंड तैयार कर लेंगे। अगर आप एनपीएस में निवेश नहीं करना चाहते तो एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में भी निवेश करके 3 करोड़ रुपये से ज्यादा का रिटायरमेंट फंड तैयार कर सकते हैं।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- यह निवेशकों के लिए सुरक्षित विकल्प, इक्विटी से बेहतर
- 25 साल में सोने ने 2,027% और निफ्टी ने 1,470% रिटर्न दिया
- एसजीबी की अनुपलब्धता में गोल्ड ईटीएफ निवेश का अच्छा तरीका

गोल्ड ने शेयर बाजार से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया, देश में आर्थिक मंदी के दौरान भी चमकता रहा सोना

असली रिटर्न तो सोने ने दिया 25 वर्ष में 2,027% का मुनाफा

2008 की आर्थिक मंदी और कोरोना महामारी के दौरान भी सोने ने अच्छा प्रदर्शन किया। भारतीय निवेशकों के लिए सोना अच्छा विकल्प है। यह उन्हें अपने निवेश को अलग-अलग चीजों में बांटने में मदद करता है। अब सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (एसजीबी) उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए गोल्ड ईटीएफ सोने में निवेश करने का सबसे अच्छा तरीका हो सकता है।

निवेश के मामले में सोना आखिरकार खरा सोना है। यह निवेश का सबसे सुरक्षित और अच्छा मुनाफा देने वाला विकल्प है। सोने में कई तरीके से निवेश किया जा सकता है। देश में चाहे मंदी हो या शेयर बाजार में उथल-पुथल, लेकिन सोना हमेशा चमकता रहा और निवेशकों को मालामाल करता रहा। इसलिए बाजार के जानकार भी सोने में निवेश करने की कहते हैं। पिछले 25 सालों के आंकड़े को देखा जाए तो सोने ने इक्विटी (शेयर बाजार) से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया है। इसके अलावा, हाल के वर्षों और खासकर आर्थिक मंदी के दौरान भी सोने ने अच्छा रिटर्न दिया है। सोने में निवेश का सबसे अच्छा तरीका गोल्ड ईटीएफ माना जा रहा है, खासकर भारतीय निवेशकों के लिए। निवेशकों के लिए सोना एक सुरक्षित विकल्प माना जाता है। यह उन्हें भरोसा दिलाता है कि उनका पैसा भरोसेमंद चीज में लगा है। एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जेरोधा ने सोने और निफ्टी-50 के प्रदर्शन की तुलना की है। उन्होंने पाया कि वर्ष 2,000 से सोने ने 2,027% का रिटर्न दिया है। वहीं, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के बेंचमार्क इंडेक्स ने 1,470% का रिटर्न दिया। यह दिखाता है कि सोना मुश्किल समय में भी अच्छा प्रदर्शन करता है। 2008 की आर्थिक मंदी और कोरोना महामारी के दौरान भी सोने ने अच्छा प्रदर्शन किया। भारतीय निवेशकों के लिए सोना अच्छा विकल्प है। यह उन्हें अपने निवेश को अलग-अलग चीजों में बांटने में मदद करता है। अब सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (एसजीबी) उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए गोल्ड ईटीएफ सोने में निवेश करने का सबसे अच्छा तरीका हो सकता है।

ऐसे की तुलना

जेरोधा ने एक चार्ट भी दिखाया, जिसमें सोने और निफ्टी के प्रदर्शन की तुलना की गई। चार्ट में दिखाया गया है कि निफ्टी आर्थिक मंदी के दौरान नीचे गिर गया था, लेकिन सोना स्थिर रहा। उन्होंने कहा, 'कोई नहीं बता सकता कि सोने की कीमतें क्यों बढ़ती हैं, लेकिन यह काम करता है।'

2025 में सोने की कीमत 18% बढ़ी

हाल के दिनों में सोने ने अच्छा प्रदर्शन किया है। 2025 में सोने की कीमत 18% बढ़ी, जबकि निफ्टी लार्ज मिडकैप 250 में 6% की गिरावट आई। 2024 में सोने ने 25% का रिटर्न दिया, जबकि निफ्टी लार्जकैप 250 ने 19% का रिटर्न दिया। यह दिखाता है कि सोना बाजार में अस्थिरता के समय में भी अच्छा प्रदर्शन करता है। 2005 से सोने ने हर साल औसतन 20% का रिटर्न दिया है। सिर्फ तीन बार ऐसा हुआ है जब सोने का रिटर्न नेगेटिव रहा है। 2023 में यह 18% गिरा, 2015 में 8% और 2021 में 2%। सोने ने इक्विटी से बेहतर रिटर्न दिया है। उन्होंने कहा, 'मैं तारीखों को थोड़ा बदल रहा हूं, लेकिन यह सच है कि 2000 से सोने ने निफ्टी से ज्यादा रिटर्न दिया है।'

सोने में निवेश का सबसे अच्छा तरीका

गोल्ड ईटीएफ भारतीय निवेशकों के लिए सोने में निवेश करने का सबसे अच्छा तरीका है। खासकर अब जब एसजीबी उपलब्ध नहीं हैं। जेरोधा एएमसी के गोल्ड ईटीएफ गोल्डकेस के लॉन्च के बारे में भी बात की। यह सही समय पर लॉन्च हुआ है, क्योंकि सोने की कीमतें बढ़ रही हैं और एसजीबी का जारी होना बंद हो गया है। सोने को ज्यादातर निवेशक एक सुरक्षित ठिकाना मानते हैं। उन्हें लगता है कि सोना एक ऐसी संपत्ति है जिस पर वे भरोसा कर सकते हैं। पिछले कुछ सालों में सोने ने शेयर बाजार से बेहतर प्रदर्शन किया है।

सोने में निवेश के तरीके

- भौतिक सोना खरीदना
- सोने के सिक्के या बार : सोने के सिक्के या बार खरीदना एक पारंपरिक तरीका है।
- सोने के जेवर : सोने के जेवर भी एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- सोने के बर्तन : सोने के बर्तन भी एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

गोल्ड एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड्स (ईटीएफ)

- गोल्ड ईटीएफ में निवेश करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने से आप सोने की कीमत में उतार-चढ़ाव से लाभ उठा सकते हैं।

गोल्ड म्यूचुअल फंड्स

- गोल्ड म्यूचुअल फंड्स में निवेश करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- गोल्ड म्यूचुअल फंड्स में निवेश करने से आप सोने की कीमत में उतार-चढ़ाव से लाभ उठा सकते हैं।

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म

- ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे कि पेटीएम गोल्ड, गोल्डबाजार, आदि पर सोने में निवेश करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर सोने में निवेश करने से आप सोने की कीमत में उतार-चढ़ाव से लाभ उठा सकते हैं।

सोने के शेयर और फ्यूचर्स

- सोने के शेयरों में निवेश करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- सोने के फ्यूचर्स में निवेश करना एक जोखिम भरा विकल्प हो सकता है।

निवेश से पहले यह करें

- सोने में निवेश करने से जोखिम जुड़ा हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि अपने निवेश के लक्ष्य तय करें, जैसे कि लंबी अवधि के लिए निवेश करना या अल्पावधि में लाभ कमाना। अपने निवेश की राशि तय करें, जो आपके लक्ष्यों और जोखिम सहनशीलता के अनुसार हो।

कम अमाउंट से भी बढ़ता जाएगा आपका पैसा, कुछ दिनों में आपके पास अच्छी खासी रकम होगी, रिकरिंग डिपॉजिट एक सुरक्षित निवेश विकल्प

सेविंग के लिए मोटी रकम नहीं है तो आरडी की आदत डालें

जानकारी | बिजनेस डेस्क

देखा जाए तो आरडी उन लोगों के लिए बेहतर है, जिनकी इनकम फिक्स है और वे नियमित रूप से बचत करना चाहते हैं। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो बड़ी रकम एकमुश्त जमा नहीं कर सकते हैं। आरडी आपको छोटी-छोटी बचत से बड़ा फंड बनाने में मदद करता है।

भारत में निवेश के लिए फिक्स्ड डिपॉजिट एक बहुत ही लोकप्रिय और सुरक्षित विकल्प है। इसमें निवेशकों का पैसा सुरक्षित रहता है और रिटर्न की गारंटी भी मिलती है, लेकिन इसके लिए बड़ी रकम की जरूरत होती है। अगर आपके पास बड़ी रकम नहीं है, तो चिंता की बात नहीं! रिकरिंग डिपॉजिट भी एक ऐसा विकल्प है, जिसमें आप छोटी-छोटी रकम जमा करके बड़ा फंड बना सकते हैं.

आरडी यानी रिकरिंग डिपॉजिट क्या है

आरडी यानी रिकरिंग डिपॉजिट एक ऐसी बचत योजना है, जिसमें आप हर महीने एक निश्चित रकम जमा करते हैं। यह उन लोगों के लिए आदर्श है, जिनकी इनकम फिक्स है और वे नियमित रूप से बचत करना चाहते हैं। आरडी में आप कम अमाउंट से शुरुआत कर सकते हैं और समय के साथ बड़ा रिटर्न पा सकते हैं।

आरडी कैसे करता है काम

आरडी में निवेशक हर महीने एक तय अमाउंट जमा करते हैं। यह समय 6 महीने से 10 साल तक हो सकता है। बैंक या पोस्ट ऑफिस इस जमा अमाउंट पर ब्याज देते हैं। यह ब्याज आमतौर पर हर तीन महीने में जोड़ा जाता है यानी क्वॉर्टर्ली कम्पाउंडेड होता है। जब आरडी मैच्योर होता है, तो निवेशक को कुल जमा रकम के साथ उस पर मिला ब्याज भी मिलता है। यह एक अच्छा तरीका है अपने पैसे को बचाने और बढ़ाने की शुरूआत कर सकते हैं। इससे कुछ समय में आप अपनी पूंजी को बढ़ा सकते हैं।

आरडी के फायदे

- हर महीने थोड़ी-थोड़ी रकम जमा कर आप बड़ी रकम जुटा सकते हैं और छोटी अवधि वाले वित्तीय लक्ष्यों जैसे बच्चों की फीस, छुट्टियों की प्लानिंग या नया मोबाइल फोन खरीद सकते हैं। पैसे को कहीं भी किसी भी काम में ला सकते हैं।
- जो लोग बचत के मामले में थोड़े आलसी हैं, उनके लिए आरडी एक बढ़िया तरीका है डिसिप्लिन लाने का। एक बार सेट कर दिया, फिर हर माह रकम अपने आप कटती रहेगी।
- स्टॉक मार्केट की तरह उतार-चढ़ाव नहीं, आरडी पूरी तरह सुरक्षित है। आपका पैसा पूरी तरह सुरक्षित रहता है और आपको गारंटीड रिटर्न भी मिलता है। इसलिए आपको इस निवेश में घबराने की जरूरत नहीं होती।
- आरडी पर मिलने वाला ब्याज फिक्स होता है, और उस पर कंपाउंडिंग लागू होती है। यानी ब्याज पर ब्याज, जिससे आपकी कमाई और बढ़ती जाती है।
- आरडी खोलना बेहद आसान है–बैंक की ऐप या वेबसाइट से बस कुछ क्लिक में अकाउंट खुल जाता है और अगर आप पोस्ट ऑफिस स्कीम चुनते हैं, तो वहाँ भी प्रोसेस सिंपल है।

आरडी के कुछ नुकसान भी

- समय से पहले निकासी पर नुकसान होता है। अगर आप आरडी को मैच्योरिटी से पहले तोड़ते हैं तो उस पर पेनाल्टी लगती है और ब्याज भी कम मिल सकता है। यानी 'जल्दबाजी में नुकसान हो सकता है। इसलिए आरडी पूरी होने पर ही पैसा निकलवाएं।
- आप एक बार जितना अमाउंट सेट कर देते हैं, वही हर महीने जमा करना होता है। बीच में ज्यादा पैसा डालना है? तो नए आरडी खोलनी पड़ेगी। यानी इसमें कोई फ्लेक्सिबिलिटी नहीं होती।
- अगर आरडी की शुरुआत के बाद मार्केट में ब्याज दरें बढ़ जाएं, तो आपको फायदा नहीं मिलेगा। आपकी आरडी पुरानी दर पर ही चलती रहेगी।
- आरडी पर मिलने वाला ब्याज पूरी तरह टैक्सेबल है। अगर सालाना ब्याज 40,000 रुपये (या सीनियर सिटीजन के लिए 50,000) से ज्यादा होता है, तो इस पर टीडीएस भी कटता है।

किन लोगों के लिए बेहतर

देखा जाए तो आरडी उन लोगों के लिए बेहतर है, जिनकी इनकम फिक्स है और वे नियमित रूप से बचत करना चाहते हैं। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो बड़ी रकम एकमुश्त जमा नहीं कर सकते हैं।

इंडेक्स फंड का क्या है, निवेश से समझ लें नफा व नुकसान

इंडेक्स फंड एक ऐसा इनवेस्टमेंट ऑप्शन है, जिसमें निवेशक एक तय इंडेक्स जैसे निफ्टी 50 या सेंसेक्स को फॉलो करने वाली स्कीम में पैसे लगाते हैं। निवेश का यह तरीका पैसिव इन्वेस्टमेंट कहलाता है, जिसमें फंड मैनेजर खुद स्टॉक्स नहीं चुनते, बल्कि इंडेक्स में शामिल शेयरों के अनुपात के अनुसार पोर्टफोलियो तैयार करते हैं। इंडेक्स फंड में निवेश करना हमारे लिए सही है या नहीं, यह जानने के लिए इसके मायने, फायदे और नुकसान को समझना जरूरी है।

क्या होते हैं इंडेक्स फंड

इंडेक्स फंड ऐसे म्यूचुअल फंड होते हैं जो किसी एक खास स्टॉक मार्केट इंडेक्स के प्रदर्शन को दोहराने की कोशिश करते हैं। मिसाल के तौर पर अगर कोई इंडेक्स फंड निफ्टी 50 को फॉलो करता है, तो वह उन्हीं 50 स्टॉक्स में उसी अनुपात में निवेश करेगा जैसे वो इंडेक्स में होते हैं। यह तरीका एक्टिव फंड्स से अलग होता है, जहां फंड मैनेजर बाजार से बेहतर रिटर्न हासिल करने के मकसद से स्टॉक्स का सेलेक्शन करते हैं।

इंडेक्स फंड में निवेश के फायदे

1. **डायवर्सिफिकेशन** : इंडेक्स फंड की सबसे बड़ी खूबी है। एक इंडेक्स फंड में निवेश करके आप एक ही बार में कई कंपनियों के शेयरों में पैसे लगा पाते हैं। इससे रिस्क का लेवल कम होता है।
2. **कम खर्च** : इन फंड्स का खर्च अन्य एक्टिव फंड्स की तुलना में काफी कम होता है, क्योंकि इसमें रिसर्च और स्टॉक सिलेक्शन की जरूरत नहीं होती।
3. **नए निवेशकों के लिए बेहतर विकल्प** : जो लोग निवेश की शुरुआत कर रहे हैं, उनके लिए यह एक समझने में आसान विकल्प होता है। निवेशक बिना ज्यादा रिसर्च के भी लॉन्ग टर्म में बेहतर रिटर्न पा सकते हैं।
4. **फंड मैनेजर पर निर्भर नहीं** : चूंकि इंडेक्स फंड पैसिव तरीके से चलते हैं, इसलिए किसी मैनेजर के गलत फैसले का रिस्क नहीं होता।

इंडेक्स फंड में निवेश के नुकसान

1. इन फंड्स का उद्देश्य सिर्फ इंडेक्स को फॉलो करना होता है, न कि उसे पीछे छोड़ना। इसलिए बाजार में तेजी के दौरान भी यह सीमित रिटर्न ही देते हैं।
2. एक्टिव फंड्स की तुलना में इंडेक्स फंड्स में फंड मैनेजर के हाथ बंधे होते है, लिहाजा गिरावट के दौरान भी वो पोर्टफोलियो में बदलाव नहीं कर सकते, जबकि फ्लेक्सी कैप या मल्टी कैप जैसे फंड्स में फंड मैनेजर वक्त के हिसाब से निवेश रणनीति में बदलाव करके बेहतर रिटर्न हासिल कर सकते हैं।
3. कई बार फंड का प्रदर्शन इंडेक्स से पूरी तरह मेल नहीं खाता, जिसे ट्रैकिंग एरर कहा जाता है। मामूली ट्रैकिंग एरर तो आम बात है, लेकिन यह एरर बढ़ जाए, तो निवेशक के रिटर्न पर असर डाल सकता है।

भारत के प्रमुख स्टॉक मार्केट इंडेक्स

निफ्टी 50 : यह इंडेक्स भारत की टॉप 50 बड़ी कंपनियों के प्रदर्शन को दर्शाता है और एनएसई का सबसे पॉपुलर इंडेक्स है।

बीएसई सेंसेक्स : यह बीएसई की टॉप 30 कंपनियों पर आधारित है और निफ्टी 50 की तरह ही भारतीय शेयर बाजार के मुख्य इंडेक्स में शामिल है।

निफ्टी नेक्स्ट 50 : यह निफ्टी 50 के बाद अगली 50 बड़ी कंपनियों का इंडेक्स है और डाइवर्सिफिकेशन के लिए बेहतर माना जाता है।

निफ्टी बैंक : यह इंडेक्स भारतीय बैंकिंग सेक्टर के टॉप स्टॉक्स को ट्रैक करता है।

बीएसई मिडकैप, निफ्टी स्मॉलकैप : ये इंडेक्स मिड कैप और स्मॉल कैप कंपनियों के प्रदर्शन को दिखाते हैं, जिनमें निवेश के साथ हाई रिटर्न और हाई रिस्क की संभावना जुड़ी हुई है। इंडेक्स फंड्स पर विचार करते समय समझने में आसान और डायवर्सिफिकेशन पर जोर देने वाले इंडेक्स को प्राथमिकता देनी चाहिए। आमतौर पर छोटे और नए निवेशकों को सेक्टोरल, थीमैटिक या एक से ज्यादा फैक्टर्स पर आधारित फैंसी नामों वाले मल्टी फैक्टर पैसिव फंड्स से दूर रहना चाहिए, क्योंकि उनमें रिस्क अधिक होता है।

सभी पुराने कर्ज मिलाकर नया लोन लेना फायदे का सौदा या मुसीबत

योजना | बिजनेस डेस्क

एक साथ कई कर्जों को संभालना और समय पर सबका भुगतान करना मुश्किल हो जाता है। इससे कभी-कभार किस्त चूकने का खतरा भी होता है। ऐसे में सभी कर्जों को मिलाकर एक ही आसान किस्त में चुकाना एक समझदारी भरा कदम हो सकता है। डेट कंसोलिडेशन यानी डेट कंसोलिडेशन एक ऐसी रणनीति है, जिसमें आपके सारे पुराने कर्जों को मिलाकर एक नया लोन बना दिया जाता है। इससे आपको कई किस्तों की जगह सिर्फ एक ही ईएमआई भरनी होती है। यह प्रक्रिया बैंक या फाइनेंशियल इंस्टिट्यूट के जरिए की जाती है। डेट कंसोलिडेशन से पुराने लोन चुकाने की प्रक्रिया आसान हो जाती है। साथ ही, इसमें ब्याज दर कम होने की संभावना होती है या चुकाने का समय बढ़ सकता है, जिससे आपकी जेब पर बोझ भी कम पड़ता है।

■ पैसे उधार लिए शख्स को सिर्फ एक ही ईएमआई भरनी होगी

अपने सभी मौजूदा कर्जों का आकलन करें

सबसे पहले यह समझें कि आपने कुल कितना कर्ज लिया हुआ है। हर लोन पर कितना ब्याज लग रहा है, कितने समय में चुकाना है और कहीं कोई जुर्माना या एक्स्ट्रा चार्ज तो नहीं है, ये सब बातें जांच लें। इससे आपको अपनी वित्तीय हालत का सही अंदाजा लगेगा और सही फैसला लेने में मदद मिलेगी।

लोन लेने की योग्यता समझें

आपका क्रेडिट स्कोर यह बताता है कि आपने अब तक अपने कर्ज कैसे चुकाए हैं। अगर ये स्कोर अच्छा है, तो आपको लोन पर कम ब्याज दर मिल सकती है और लोन लेना भी आसान हो जाता है। इसलिए सबसे पहले अपना क्रेडिट स्कोर चेक करें। अगर स्कोर ज्यादा है, तो आपको बेहतर शर्तों जैसे –कम ब्याज, ज्यादा लोन राशि या लोन चुकाने के लिए ज्यादा समय पर लोन मिलने की संभावना बढ़ जाती है। हालांकि, लोन को एक साथ मिलाकर नया लोन लेने से क्रेडिट स्कोर थोड़े समय के लिए थोड़ा घट सकता है, लेकिन अगर आप समय पर किस्तें भरते रहें तो आपका स्कोर फिर से अच्छा हो सकता है।

क्या कहते हैं जानकार

बाजार के जानकारों का कहना है कि अच्छा क्रेडिट स्कोर अक्सर आपको डेट कंसोलिडेशन पर कम ब्याज दरों के लिए योग्य बनाता है। इससे कुल ब्याज खर्च कम हो जाता है और रिपेमेंट को मैनेज करना हो सकता है। अच्छा क्रेडिट स्कोर होने पर आपको लोन चुकाने के लिए ज्यादा समय मिल सकता है या जरूरत से ज्यादा पैसा भी मिल सकता है। इससे लोन चुकाना आसान हो जाता है और आप अपने पैसों को बेहतर तरीके से संभाल सकते हैं।

ब्याज दर और दूसरे शुल्क देखें

अपने पुराने लोन को मिलाकर जब आप नया लोन लेने की सोच रहे हों, तो यह जरूर देखें कि कहीं उस पर ज्यादा ब्याज या कोई एक्स्ट्रा चार्ज तो नहीं हैं। नया लोन तभी फायदेमंद है जब उसकी ब्याज दर और बाकी चार्ज आपके पुराने लोन से कम हों। इसलिए अलग-अलग विकल्पों की तुलना करना जरूरी है।

लोन चुकाने की अवधि और योजना देखें

अगर आप लंबे समय के लिए लोन लेते हैं तो आपकी हर महीने की किस्त (ईएमआई) कम हो सकती है, लेकिन ऐसा करने से आपको कुल मिलाकर ज्यादा ब्याज देना पड़ सकता है। इसलिए चुकाने की अवधि सोच-समझकर चुनें, ताकि आपकी जेब पर ज्यादा बोझ न पड़े।

खर्च करने की आदतों पर लगाम लगाएं

सभी मौजूदा कर्जों को मिलाकर जब आप एक नया लोन लेते हैं यानी डेट कंसोलिडेशन स्टैटेजी अपनाते हैं, तो जरूरी है कि आप फालतू खर्च से बचें और कोई नया कर्ज न लें। अगर आप खर्च पर कंट्रोल नहीं रखेंगे तो कर्ज कम होने के बजाय और बढ़ सकता है। इसलिए समझदारी से बजट बनाएं, जरूरत के मुताबिक ही खर्च करें, और समय पर किस्त चुकाएं। अगर किसी बात को लेकर भ्रम हो, तो अपने वित्तीय सलाहकार से बात करके अपनी स्थिति के हिसाब से सही सलाह जरूर लें। ऐसा करने से आपको अपनी वित्तीय हालत के हिसाब से डेट कंसोलिडेशन रणनीति आपनाने में मदद मिल सकती है।

अच्छा तरीका संभव

सभी कर्जों को मिलाकर एक लोन लेना (डेट कंसोलिडेशन) कई बार कर्ज संभालने का अच्छा तरीका हो सकता है, लेकिन इसे अपनाने से पहले ये देखना जरूरी है कि ये तरीका आपके लिए सही है या नहीं। इसका आपके पैसों पर क्या असर पड़ेगा, ये समझकर ही कोई फैसला लें। अगर आप सोच-समझकर सही फैसला लेंगे, तो कर्ज चुकाने में आसानी होगी और आपकी आर्थिक हालत भी लंबे समय तक मजबूत बनी रहेगी। पहले तो कोशिश यही करें की लोन न लेना पड़े।

खबर संक्षेप

मार्केटिंग मैनेजर के साथ मारपीट

सिरसा। पुलिस ने संजीवनी अस्पताल के मार्केटिंग मैनेजर मांगेराम निवासी ताजियाखेड़ा की शिकायत पर एक महिला सहित तीन लोगों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। मांगेराम ने बताया कि 11 अप्रैल की दोपहर एक बजे वह अस्पताल में था। तभी दलवीर उर्फ सपल पुत्र नारायण निवासी कोटली, उसका भाई कृष्ण व उसकी पत्नी अस्पताल के भीतर आए और उसके साथ बहसबाजी करने लगे, उसके साथ मारपीट की। पुलिस ने शिकायत के आधार पर तीनों के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

बिजली ट्रांसफार्मर के उपकरण चोरी

सिरसा। पुलिस ने विद्युत निगम के एसडीओ विकास की शिकायत पर अज्ञात के खिलाफ चोरी का मामला दर्ज किया है। एसडीओ की ओर से दर्ज करवाई गई शिकायत में बताया कि अज्ञात व्यक्ति ने पनिहारी निवासी गुरजीत कौर पत्नी सुखविंद्र सिंह के खेत में लगे बिजली के ट्रांसफार्मर से कीमती उपकरण चुरा लिए। चोरीशुदा उपकरणों की कीमत 20 हजार रुपये बताई गई है।

दो मोटरसाइकिल व एक स्कूटी चोरी, केस दर्ज

सिरसा। अलग-अलग स्थानों से चोर दो मोटरसाइकिल व स्कूटी चोरी कर ले गए। पुलिस को दी शिकायत में पहले मामले में जसविंद्र सिंह सेठी निवासी ई-ब्लॉक ने बताया कि बीती 5 अप्रेल को उसने अपने चाचा के घर के बाहर स्कूटी खड़ी की थी। कुछ देर बाद संभाली तो स्कूटी गायब मिली। दूसरे मामले में रानियां के वार्ड नंबर 4 निवासी गौरव गांधी ने बताया कि वह रानियां में मोबाइल रिपेयरिंग की दुकान करता है। उसने बताया कि सुबह वह बाइक लेकर दुकान पर आया था। ।

ससुराल गए युवक की संदिग्ध मौत

फतेहाबाद। अपनी ससुराल गए टोहाना के एक युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला सामने आया है। गांव अमानी निवासी 22 वर्षीय गुरजीत की मौत के मामले में परिजनों ने पत्नी रीना, सास, ससुर और दो सालों पर हत्या का आरोप लगाया है। मृतक के पिता नानक के अनुसार, गुरजीत की शादी डेढ़ साल पहले उचाना के गांव तरखा निवासी रीना से हुई थी। शादी के बाद से ससुराल पक्ष के लोग गुरजीत को परेशान करते थे। कुछ समय पहले जब गुरजीत के घर बेटी का जन्म हुआ, ससुराल पक्ष के लोग उसकी पत्नी को अपने साथ ले गए थे। शुक्रवार को गुरजीत की सास ने उसे फोन कर बुलाया।

बहबलपुर कॉलेज में मनी आंबेडकर जयंती

फतेहाबाद। गांव बहबलपुर स्थित मुख्त्यार सिंह मैमोरियल पीजी कॉलेज में संविधान निर्माता व भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। सर्वप्रथम बाबा साहब को श्रद्धांजलि दी गई। कॉलेज प्राचार्य डॉ. ओपी नागपाल ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि यह दिन भारत में सामाजिक न्याय, समानता और शिक्षा के महत्व को याद दिलाता है। डॉ. अम्बेडकर को भारतीय संविधान का जनक माना जाता।

अनाज मंडियों में 86145 क्विंटल सरसों की आवक

फतेहाबाद। जिला की विभिन्न मंडियों व खरीद केंद्रों में अब तक 86145 क्विंटल सरसों फसल की आवक हुई है, जिसमें से फतेहाबाद अनाज मंडी में 12611 क्विंटल, भट्टू कलां में 39062 क्विंटल तथा भूना में 34472 क्विंटल शामिल है। इसके साथ ही जिला की मंडियों से 65792 क्विंटल सरसों फसल की खरीद की जा चुकी है।

आज पटवार भवन में मनेगी आंबेडकर जयंती

फतेहाबाद। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर सभा फतेहाबाद की बैठक प्रधान रामकिशन तंवर की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सभा द्वारा डॉ. अम्बेडकर जयंती मनाने को लेकर चर्चा की गई।

हनुमान कथा सुनकर भक्ति से सराबोर हुए श्रद्धालु, लगे जय श्रीराम के जयकारे

वीआईपी कल्चर जहां हैं, वहां भक्ति का कोई अर्थ नहीं : डॉ. स्वामी उमानंद

हनुमान मंदिर, जवाहर नगर में हनुमान कथा का अंतिम दिन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार । हनुमान मंदिरजवाहर नगर में प्रवचन देते स्वामी सत्यानंद व कथा श्रवण करते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

रामभक्त हनुमान मंदिर समिति, गली नम्बर-2 जवाहर नगर के 30वें वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष्य में चल रही संगीतमय हनुमान कथा के अंतिम दिन शनिवार को हनुमान जयंती धूमधाम से मनाई गई। कथा व्यास डॉ. स्वामी उमानंद मानसमणि ने कहा कि किसी भी पवित्र वस्तु को रखने के लिए शुद्धता की आवश्यकता होती है। जहां गंदगी हो, वहां पूजा की वस्तुओं को नहीं रखा जा सकता है। ऐसे ही हृदय में भगवान नाम को रखने के लिए मन की कलुषित भावनाओं की सफाई जरूरी है। इस अवसर पर मंदिर समिति के प्रधान इन्द्रचंद राठी, के.के.सेहरा, एच.के.शर्मा, रामप्रताप लेगा, भगतचंद मेहता, प्रीतम छाबड़ा, हरबंस ग्रोवर, नारायण दास तनेजा, ओ.पी.सुखीजा, किशोरीलाल वधवा, देवराज ललित, रमेश गांधी, वजीर चंद वधवा, देसराज, ओमप्रकाश चुटानी, रामकुमार गोदारा, अमीरचंद वधवा, ललित राठी, अर्जुन ललित, संजीव पंवार एडवोकेट, विनोद बिश्नोई, सूरज प्रकाश, राजेन्द्र गर्ग, नवनीत आदि भी उपस्थित रहे। इसके बाद सत्यनारायण कथा की गई तत्पश्चात हवन किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान अनिल गोदारा सपत्नीक रहे। अंतिम दिन की सत्संग सभा के समापन पर भंडारा चलाया गया।

श्रीराम के प्रति हनुमान जी की निष्ठा अद्भुत

उन्होंने कहा कि भगवान राम के प्रति हनुमानजी की निष्ठा और सेवा की पराकाष्ठा अनुकरणीय है। विनम्रता और सादगी ही भक्तों की पहचान है। वीआईपी कल्चर जहां है वहां भक्ति नहीं है। दूसरों को मान देना ही भक्तों का पहला लक्षण है। महामंडलेश्वर स्वामी विवेकानंद महाराज वृंदावन के कृपापात्र पीठाधीश्वर स्वामी सत्यानंद महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि जहां हनुमान कथा होती है, वहां अवश्य ही स्वयं हनुमानजी विराजते है। हनुमान जैसा भक्त और सेवादार दूसरा कोई नहीं हो सकता। स्वामी प्रणवानंद महाराज ने भी प्रवचन दिये। भजन गायक सुमित मित्तल ने भजनों की वर्षा की। इससे पूर्व सुबह अखण्ड हनुमान चालीसा पाठ का समापन किया गया।

हिसार : पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में हिस्सा लेते विद्यार्थी।

दयानंद कॉलेज में पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन का हुआ आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

दयानंद कॉलेज के भौतिकी विभाग और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वाधान में पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 'द साईंस ऑफ स्पेस क्राफ्ट मालफक्शन एंड ह्यूमन रेजीलियंसः लेसन्स फ्रॉम सुनिता विलियम्स' तथा 'द कम्प्यूटर साईंस बिहाइंड स्टारलिंकः बिल्डिंग ए ग्लोबल इंटरनेट थ्रू सेटेलाईट नेटवर्क्स' पर दोनों विभाग के कई छात्रों ने पॉवरपॉइंट प्रस्तुतियां दी। प्रतियोगिता में बीएससी द्वितीय की छात्रा नेहा पहले स्थान, बीएससी द्वितीय छात्रा भावना दूसरे स्थान पर एवं बीसीए तृतीय के छात्र दीपक तीसरे स्थान पर रहे। इसके अलावा, बीसीए तृतीय की छात्रा भावना को प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ विक्रमजीत सिंह ने छात्रों को इस तरह के आयोजनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इस मौके पर संयोजक प्रो. चेतन शर्मा और आयोजन सचिव प्रो. नरेंद्र कुमार, असिस्टेंट प्रो. रितु , असिस्टेंट प्रो. मीना और आशीष आदि मौजूद रहे

हॉकी स्टार उदिता दुहन और मंदीप का स्वागत

- उदिता और मंदीप दोनों ने देश को बहुत सम्मान दिलाया : डॉ. दुहन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार ।: हॉकी स्टार उदिता व मनदीप सिंह का स्वागत करते डॉ. भूपेंद्र दुहन व अन्य।

अंतरराष्ट्रीय हॉकी स्टार उदिता दुहन और मंदीप सिंह का शनिवार को यहां पहुंचने पर परिवार द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया। हाल ही में विवाहित जोड़े का स्वागत पूर्व जिला बागवानी अधिकारी डॉ. भूपेंद्र सिंह दुहन ने परिवार के सदस्यों संग किया। इस अवसर पर डॉ. भूपेंद्र दुहन ने गर्व व्यक्त करते हुए कहा कि उदिता और मंदीप दोनों ने देश को बहुत सम्मान दिलाया है और महत्वाकांक्षी एथलीटों के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करते हैं। उनका समर्पण, अनुशासन और उपलब्धिया पूरे देश के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उदिता दुहन, एक प्रतिभाशाली डिफेंडर, भारतीय महिला हॉकी टीम का अभिन्न अंग रही हैं। उन्होंने 2020 टोक्यो ओलंपिक, एफआईएच हॉकी विश्व कप, राष्ट्रमंडल खेल और एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी सहित प्रमुख अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

देश का किया नाम रोशन

डॉ. भूपेंद्र दुहन ने बताया कि जालंधर में जन्मे मनदीप सिंह ने 2013 में भारतीय पुरुष हॉकी टीम में फॉरवर्ड स्ट्राइकर के तौर पर पदार्पण किया था और तब से वे लगातार मैदान पर अपनी ताकत का प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कई एफआईएच हॉकी विश्व कप, चैंपियंस ट्रॉफी, एशियाई खेलों और एफआईएच प्रो लीग में भारत का प्रतिनिधित्व किया है और भारत के पोडियम फिनिश में अहम भूमिका निभाई है। अपने खेल कौशल के लिए वे पंजाब पुलिस में पुलिस उपाधीक्षक (डीएसपी) के पद पर कार्यरत हैं।

सुंदर भजनों से राममय हुआ वातावरण

पूर्णिमा पर श्री हनुमान कथा सुन श्रीराम की भक्ति में डूबे भक्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हनुमान मंदिर में आयोजित जागरण में बाबा का गुणगान करते

आदमपुर टेल वाला कुटिया हनुमान मंदिर में चैत्र पूर्णिमा हनुमान जयंती के उपलक्ष में बाबा हनुमान का 44 वां विशाल जागरण आयोजित किया आया। इसका शुभारंभ मंदिर प्रधान निरंजन बंसल, व्यापार मंडल के सचिव कमल बंसल, अजीत जाखड, शेर सिंह यादव, आनंद अग्रवाल, शिव गोयल, सज्जन, कश्मीरी गर्ग,संपत सिंह राजपुरोहित सहित 11 समाजसेवियों ने संयुक्त तौर पर किया। जागरण में बरवाला से आई पूजा सांवरिया एवं मन की भावना, रश्मिका गोयल, सुरेश बालसमंदिया आदि गायकों ने शानदार शब्दों में बाबा हनुमान का गुणगान करके सबको झूमने नाचने को मजबूर कर दिया। सुबह मेले का आयोजन किया गया तथा सात सवामणी लड्डुओं की एवं दो क्विंटल खीर का प्रसाद वितरित किया गया। इस इस मौके पर विनोद गोयल, विनोद कृष्ण धमीजा, नरेश जांगड़ा, पवन शर्मा, हीरालाल शर्मा, विनोद नामदेव आदि रहे।

एफसी कॉलेज में पूर्णिमा पर हवन का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार : हवन में आहुति डालती कॉलेज स्टाफ सदस्य।

फतेहचन्द महिला महाविद्यालय में संस्कृत व योग विभाग के संयुक्त सौजन्य से पूर्णिमा के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ॰ मीनाक्षी महाजन ने छात्राओं को उद्बोधित करते हुए कहा कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' यज्ञ सृष्टि का श्रेष्ठ कर्म है। हमें प्रतिदिन श्रद्धा भाव से यज्ञ करना चाहिए। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

अग्रोहा के विकास को ली बैठक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

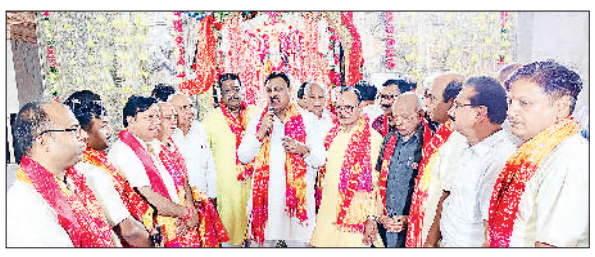

हिसार। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग उपस्थित भक्तों को संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

अग्रोहा धाम में हनुमान जयंती व पूर्णिमा के पावन पर्व पर छप्पन भोग, सवामणी, भण्डारा, भव्य भजन समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर अग्रोहा धाम अग्रोहा विकास ट्रस्ट के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग की अध्यक्षता में समाज के प्रतिनिधियों की मीटिंग हुई। इस मीटिंग में अग्रोहा के विकास बाबत विचार किया गया। कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैश्य समाज के सहयोग से अग्रोहा धाम में करोड़ों रुपये की लागत से भोजनालय कक्ष व बैंक्विट हाल बनाना गया है। अग्रोहा धाम में 30 करोड़ रुपये की लागत से महाराजा अग्रसेन जी के नाम पर दो म्यूजियम व ऑडिटोरियम लगभग 1200 सैटिंग वाला भव्य ऑडिटोरियम का सौंदर्यकरण का काम चल रहा है। यहां अग्रवाल सभा बरेली के प्रधान अजय अग्रवाल, महासचिव राजीव बूबना, संयोजक अतुल अग्रवाल, संजय गर्ग, उमेश अग्रवाल बरेली, महेश अग्रवाल मथुरा आदि रहे।

शिक्षा और समाज मे अखंडता बनाए रखने की शपथ ली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार : कार्यक्रम में शपथ लेती छात्राएं।

राजकीय महिला महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाई द्वारा डॉ. बीआर अम्बेडकर जयंती को बड़े हर्षोल्लास से बनाया गया। इसमें एक ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, पदयात्रा और एक संकल्प ग्रहण का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी हीना द्वारा अतिथियों के स्वागत किए जाने से हुई। इसके बाद प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें डॉ.अम्बेडकर के जीवन और समाज मे उनके योगदान पर प्रश्न पूछे गए।उसके बाद डॉ. अम्बेडकर के द्वारा बताए गए शिक्षा और समाज मे अखण्डता बनाए रखने के लिए शपथ ली गई। इसके बाद स्वयंसेवकों ने महाविद्यालय में पद यात्रा निकाली।

गुजवि ने शिक्षा को रोजगार से जोड़ा

- वर्ष 2025 में अब तक हो चुकी 300 से अधिक विद्यार्थियों की प्लेसमेंट

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई।

शिक्षा का उद्देश्य एक नेक नागरिक बनाने के साथ-साथ प्रतिष्ठित रोजगार दिलाना भी है। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने अपने विद्यार्थियों को रोजगार दिलाने के उद्देश्य से विशेष प्रयास आरंभ किए हैं। इन प्रयासों के परिणाम भी सामने आने लगे हैं। वर्ष 2025 के पहले तीन महीने से भी कम समय में विश्वविद्यालय के 300 से अधिक विद्यार्थियों की ऑन-कैंपस प्लेसमेंट हो चुकी है। खास बात ये है कि विवि के इतिहास में पहली बार विद्यार्थियों को ऑन-कैंपस इंटरनेशनल प्लेसमेंट भी मिली है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि विश्वविद्यालय ने शिक्षा को सीधे रोजगार से जोड़ने की पहल की है। हर विभाग में प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर की नियुक्ति की गई है। विश्वविद्यालय इस वर्ष एक बड़ा रोजगार मेला लगा चुका है। कहा कि शिक्षा का उद्देश्य एक नेक नागरिक बनाने के साथ-साथ प्रतिष्ठित रोजगार दिलाना भी है।

जबकि दूसरा बड़ा रोजगार मेला 18 व 19 अप्रैल को लगेगा। इस मेगा रोजगार मेले में देश की 100 से अधिक प्रतिष्ठित कंपनियां प्लेसमेंट के लिए आएंगी। रोजगार मेले में यूटीडी के साथ-साथ सम्बद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थी भी भाग ले सकेंगे।

बैसाखी मेले पर निकाला नगर कीर्तन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

हांसी। बैसाखी मेले पर आयोजित नगर कीर्तन के दौरान संकीर्तन करते श्रद्धालु

शेषावतार भगवान श्री लक्ष्मण जी के पावन स्थल मंदिर श्री लक्ष्मण चौतरा पर आयोजित 68वें बैसाखी मेले महोत्सव के प्रथम दिन नगर कीर्तन निकाला गया। नगर कीर्तन का शहर में जगह जगह स्वागत किया गया। नगर कीर्तन में राधा नाम की बोलियों पर श्रद्धालु जमकर झुमे।

महंत माधव बावा ने बताया कि शुक्रवार शाम को आए तेज तूफान के कारण नगर कीर्तन करीब ढाई घंटा देरी से निकाला गया। नगर कीर्तन मंदिर श्री लक्ष्मण चौतरा से प्रारंभ होकर गोसाईं गेट, डडल पार्क, लाल सड़क, पुराना भारत सिनेमा, चौपटा, सदर बाजार, छाबड़ा चौक, प्रताप बाजार, मक्कड़ कोठी बाजार, गोल कोठी, चार कुतुब गेट से वापस मंदिर पहुंचा। नगर कीर्तन में बृज रसिक साक्षी बावा, भैया पीयुष रसिक, भैया जितेंद्र बांगा सहित अन्य रसिकों ने भजनों के माध्यम से प्रभु का गुणगान किया। बरसाने गलियां वीच पाओ राधा नाम की बोली, ऊंची अटारी पर बजे राधा नाम का ढोल, मंदिर लक्ष्मण चौतरा आके वेखो लगे राधा नाम दे मेले, जैसी बोलियों पर श्रद्धालु जमकर झूमे।

ये रहे मौजूद

इस दौरान मंदिर समिति के सरपरस्त बक्शी लाल ठकराल, एडवोकेट सुरेंद्र राजपाल, भारत भुषण शर्मा, अशोक गांधी, अनिल मल्होत्रा, गौरव सिंद्धवानी, प्रशांत राजपाल, विनोद चौपड़ा, दिनकर गावड़ी, श्याम वासुदेव, संजय खुराना सहित काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

श्री प्रयागगिरी शिवालय ट्रस्ट की ओर से शिवपुराण कथा जारी

दो कुल का चिराग होती बेटियां : करूणागिरी

- सृष्टि का सबसे पहला कन्यादान सती का हुआ था जो ब्रह्मा जी ने करवाया था

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार। संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग दास गर्ग कथा में आए अतिथियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

महामंडलेश्वर साध्वी करूणागिरी महाराज ने कहा है कि कन्या दो कुल का चिराग होती है। कन्या माता-पिता की सुगंध होती है और परिवार की पहचान व अनुशासन होती है। ऐसे में सदैव बेटियों को सम्मान दें और कभी भी बेटे व बेटी में भेदभाव न करें।

महामंडलेश्वर साध्वी करूणागिरी महाराज श्री प्रयागगिरी शिवालय ट्रस्ट की ओर से संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग के सानिध्य में चल रही श्री शिवपुराण कथा में श्रद्धालुओं को संबोधित कर रही थीं। कथा के छठे दिन शनिवार को उन्होंने श्रद्धालुओं को बेटियों के बारे में बातें बताई। उन्होंने कहा कि कन्यादान करने वाला पिता सबसे बड़ा खुशनसीब होता है। सृष्टि का सबसे पहला कन्यादान सती का हुआ था जो ब्रह्मा जी ने करवाया था। यह कन्यादान हरिद्वार के कनखल में हुआ। उन्होंने कहा कि बेटियों को दो कुल का चिराग क्यों कहा जाता है, क्योंकि वो माता-पिता के पास रहेगी तो उनका नाम रोशन करेगी और उनके घर की मर्यादा बनाए रखेगी। शादी के बाद जब वह ससुराल जाएगी तो ससुराल की मर्यादा कायम रखेगी।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग दास गर्ग ने पीजीएसडी संस्थाओं के अधीन चल रहे स्कूल व मंदिर भवनों का ब्यौरा दिया। बजरंग गर्ग ने आए अतिथियों का स्वागत किया और उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने मुख्य अतिथि प्रमुख समाजसेवी मंगाली गौशाला के प्रधान नरेश अग्रवाल मंगालीवाला, श्री कुरुक्षेत्र गौशाला के प्रधान सत्यप्रकाश राजलीवाला, प्रमुख समाजसेवी मनोज गर्ग पैट्रोल पंप वाले, हरियाणा सीड्स एसोसिएशन के प्रधान कुनाल गोयल, श्री अग्रवाल सेवा समिति के प्रधान शिवकुमार गोयल को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। मंच का संचालन प्रबंधक ओमप्रकाश असीजा ने किया।

विष्णु भगवान मंदिर में सत्यनारायण कथा सुनकर प्रभु की भक्ति में डूबे भक्त

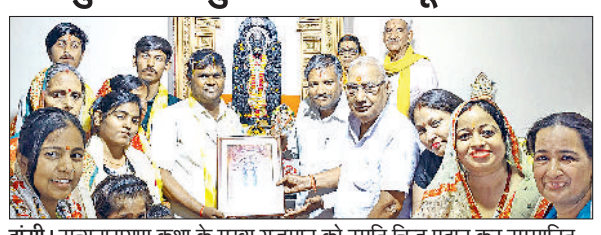

हांसी। सत्यनारायण कथा के मुख्य यजमान को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते पंडित पुरुषोत्तम जोशी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

चौपटा बाजार स्थित विष्णु भगवान मन्दिर ट्रस्ट द्वारा शनिवार को चैत्र पूर्णिमा के अवसर पर श्री सत्यनारायण भगवान जी की कथा का आयोजन मन्दिर प्रांगण हांसी में किया गया । कथा में समाजसेवी अशोक सक्सेना अपनी पत्नी रेणु सक्सेना ने मुख्य यजमान के रूप में शिरकत की। श्री विष्णु भगवान मन्दिर के पुजारी एवं कथा वाचक पंडित पुरुषोत्तम जोशी ने श्री सत्यनारायण भगवान जी की कथा करते हुए सर्वप्रथम कथा की महत्ता बताते हुए कहा कि इस कथा से वंशजों को सुख, समृद्धि, संतान, यश, कीर्ति, वैभव, पराक्रम, संपत्ति, ऐश्वर्य, सौभाग्य और शुभता का वरदान मिलता है। यह कथा घर में कराने से पूर्वजों को भी शांति और मुक्ति मिलती है। श्री सत्यनारायण कथा के पश्चात भंडारे का आयोजन किया गया।

खबर संक्षेप

करोड़ों की धोखाधड़ी के आरोप में केस दर्ज

हिसार। इंडस्ट्रीयल एरिया की जेएस स्टील्स फर्म के साथ मुंबई की एक फर्म के डायरेक्टर ने करोड़ों रुपये के माल की हेराफेरी की है। अर्बन एस्टेट थाना पुलिस ने इस संबंध में अर्बन एस्टेट के निवासी एवं जेएस स्टील्स फर्म के राजेंद्र केडिया की शिकायत पर मुंबई की कंपनी के डायरेक्टर विजय के खिलाफ धोखाधड़ी व जालसाजी का केस दर्ज किया है।

पारले प्रोडक्ट्स में लिया औद्योगिक प्रशिक्षण

मंडी आदमपुर। आदमपुर के राजकीय बहुतकनीकी संस्थान के खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग के चौथे सेमेस्टर के 44 छात्र-छात्राओं ने स्टाफ सदस्यों के साथ पारले प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड नीमराणा का औद्योगिक प्रशिक्षण किया। भ्रमण के दौरान कंपनी के गुणवत्ता प्रभारक आशीष ने उत्पादन प्रक्रिया और गुणवत्ता मानकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। छात्रों को उद्योग की कार्यप्रणाली को बेहतर ढंग से समझाने के लिए एक वीडियो प्रस्तुति भी आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त छात्रों के सवालों को स्पष्ट करने और उनकी शंकाओं का समाधान करने के लिए एक प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया।

हनुमान जयंती पर कई कार्यक्रमों का आयोजन

उकलाना। हनुमान जयंती पर श्री बालाजी धाम पुरानी मंडी में हवन यज्ञ का आयोजन हुआ उस उपरांत बाबा को भोग लगाया गया इस उपरांत भंडारों का आयोजन किया गया। इसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया। वहीं हनुमान मंदिर बिजली घर में हवन यज्ञ का आयोजन हुआ और उस उपरांत भंडारे का आयोजन किया गया वहीं क्षेत्र के सबसे पुराने प्राचीन मंदिर सूरे वाला में बालाजी महाराज की पूजा अर्चना हवन यज्ञ के साथ शुरू हुई फिर भव्य भंडारे का आयोजन हुआ।

डाटा में प्ले स्कूल में किया रेडीनेस मेले का आयोजन

हांसी। डाटा गांव में शनिवार को प्ले स्कूल में रेडीनेस मेले का आयोजन किया गया। प्ले स्कूल इंचार्ज गायत्री देवी ने इस रेडिनेस मेले का आयोजन किया। मेले में गांव के सरपंच रामकुमार मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और रिबन काट मेले का उद्घाटन किया। मेले में आंगनवाड़ी केंद्र की महिला एवं बाल विकास विभाग की सुपरवाइजर रितु रानी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। प्ले स्कूल प्रभारी गायत्री देवी ने इस रेडीनेस मेले में उपस्थित लोगों को आंगनवाड़ी केन्द्र में कार्यरत महिलाओं एवं बालिकाओं को मिलने वाली सुविधाओं, उनके महत्व एवं विभिन्न गतिविधियों व योजनाओं के बारे में जागरूक किया।

हर्षोल्लास से मनाई बैसाखी व अंबेडकर जयंती

बरवाला। डीएवी राजीव गाँधी थर्मल पावर प्लांट पब्लिक स्कूल,खेदड़ में बैसाखी का त्यौहार पूरे उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना व गायत्री मंत्र से हुई। विद्यार्थियों ने बैसाखी के इस पवित्र त्यौहार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कविता व नृत्य प्रस्तुत किए। इसके अलावा विद्यालय में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जयंती मनाई गई।

कुमारी सैलजा कल करेंगी माल्यार्पण

हिसार। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री व सांसद कुमारी सैलजा 14 अप्रैल को डॉ. अंबेडकर जयंती पर प्रातः 9 बजे हिसार के लघु सचिवालय में स्थित बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके अपने श्रद्धासुमन अर्पित करेंगी। हरियाणा कांग्रेस लीगल डिपार्टमेंट के अध्यक्ष एडवोकेट लाल बहादुर खोवाल ने बताया कि इसी दिन दोपहर 12 बजे डॉ. भीमराव अंबेडकर सभा द्वारा सिरसा के गांव कालांवाली में आयोजित कार्यक्रम में सांसद कुमारी सैलजा शामिल होंगी। कुमारी सैलजा इस दौरान भारत रत्न डॉ. अंबेडकर के जीवन व दर्शन पर विचार व्यक्त करेंगी।

महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती पर जूडो कप का आयोजन

महात्मा ज्योतिबा फुले स्पोर्ट्स समिति बनी ऑलओवर चैंपियन

जूडो कप प्रतियोगिता का आयोजन राइजिंग सन पब्लिक स्कूल महाबीर कॉलोनी में किया गया। जूडो कप में विभिन्न भार वर्ग मे लड़कों व लड़कियों के मुकाबले हुए।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। विजेताओं खिलाड़ियों को सम्मानित करते अतिथिगण। फोटो : हरिभूमि

यह रहे उपस्थित

इस प्रतियोगिता के अवसर पर मोहिंद्र खोवाल, सुरेश सैनी कोच, जितेंद्र कश्यप कोच, अनिल कुकरेजा, हेमन्त गौड, विकास सैनी, ललित सैनी, शशि सैनी, अनिल सैनी, कविता, हितेश, पवन, सोनू जमालपुरिया, सुशील सैनी खोवाल, महेंद्र सैनी प्रधान व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती के अवसर पर महात्मा ज्योतिबा फुले स्पोर्ट्स समिति द्वारा जूडो कप प्रतियोगिता का आयोजन राइजिंग सन पब्लिक स्कूल महाबीर कॉलोनी में किया गया। जूडो कप में विभिन्न भार वर्ग मे लड़कों व लड़कियों के मुकाबले हुए। प्रतियोगिता में महात्मा ज्योतिबा फुले स्पोर्ट्स समिति ऑल ओवर चैंपियन रही, जबकि बुढ़ाखेड़ा दूसरे स्थान पर और सलेमगढ़ तीसरे स्थान पर रहे।

प्रतियोगिता में लड़कों व लड़कियों के भार वर्ग मे सलेमगढ़, बुढ़ाखेड़ा, महावीर स्टेडियम, जुगलान, उकलाना व राइजिंग सन स्पोर्ट्स अकेडमी और महात्मा ज्योतिबा फुले स्पोर्ट्स समिति की टीमों ने हिस्सा लिया।

प्रतियोगिता में वरिष्ठ भाजपा नेता रवि सैनी ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की, जबकि वशिष्ठ अतिथि के तौर पर भाजपा सब्जी मंडी मंडल अध्यक्ष लोकेश असीजा, भाजपा अर्बन मंडल अध्यक्ष राहुल सैनी, पार्षद हरि सिंह सैनी सांखला, पार्षद रवि सैनी जमालपुरिया, पार्षद प्रतिनिधि प्रीतम सैनी, राजेंद्र सैनी, प्रीतम सैनी, प्रहलाद सैनी, सतीश सैनी उपस्थिति रहे। प्रतियोगिता की अध्यक्षता महात्मा ज्योतिबा फुले स्पोर्ट्स समिति के प्रधान राम अवतार सैनी ने की।

लड़कियों के परिणाम

लड़कियों के 27 किलो भार वर्ग में मानवी प्रथम, गणिका द्वितीया, जानवी तृतीय स्थान, 32 किलो भार वर्ग में पायल प्रथम, गुन्जन द्वितीय, 40 किलो भार वर्ग में नेहा प्रथम, खुशबू द्वितीय, सलोनी व खुशी तृतीय, 48 किलो भार वर्ग में आशा प्रथम, अनु द्वितीय, यासमीन व किरण तृतीय, 52 किलो भार वर्ग में मोनिका प्रथम, आरती द्वितीय, ज्योति तृतीय, 57 किलो भार वर्ग में प्रांजल प्रथम, भावना द्वितीय, वीना तृतीय, 57 किलो से ऊपर भार वर्ग में रुकेश प्रथम, वैष्णवी द्वितीया, सपना तृतीय स्थान पर रही।

लड़कों के परिणाम

लड़कों के 25 किलो भार वर्ग में कार्तिक प्रथम, आर्यन द्वितीय, यश व हितेश तृतीय, 30 किलो भार वर्ग में यश प्रथम, सुमित द्वितीय, योगेश गितांशु तृतीय, 35 किलो भार वर्ग में दीपांशु प्रथम, यश द्वितीय, रोशन व रुद्रा तृतीय 40 किलो भार वर्ग में निखिल प्रथम, हिमांशु द्वितीय, यश व हिमांशु तृतीय, 45 किलो भार वर्ग में नमन प्रथम, विकास द्वितीय, वत्सल व मुकेश तृतीय, 50 किलो भार वर्ग में अमन शर्मा प्रथम, हिमांशु द्वितीय, रोहित व मानव तृतीय, 55 किलो भार वर्ग में चिराग प्रथम, अक्षय द्वितीय, आर्य व मोहित तृतीय, 60 किलो भार वर्ग में हर्ष प्रथम, मनजीत द्वितीय, योगेश वह अमन तृतीय, 66+ भार वर्ग में राजकुमार प्रथम, पुनित द्वितीय स्थान पर रहे।

स्वदेशी जागरण मंच के योग शिविर में मनाया हनुमान जन्मोत्सव

हिसार। स्वदेशी जागरण मंच के निशुल्क योग शिविर में श्री हनुमान जन्मोत्सव मनाते हुए प्रभात फेरी में हिस्सा लेते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

- प्रभातफेरी निकाली व किया हनुमान चालीसा पाठ
- जिंदल पार्क में आज लगेगा स्वदेशी चिकित्सा शिविर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

कपड़ा मार्केट के पास स्थित जिंदल पार्क में चल रहे निशुल्क योग शिविर के दौरान पूरा पार्क जय श्री हनुमान के उद्घोष से गूंज उठा। दरअसल स्वदेशी जागरण मंच ने श्री बालाजी सालासर मंडल के तत्वावधान में और पतंजलि योग समिति, स्माइल क्लब व हिसार हेल्थ क्लब के सहयोग से श्री हनुमान जन्मोत्सव का आयोजन किया। इस अवसर पर सभी साधकों, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने हनुमान जी के लाल ध्वज लेकर प्रभात फेरी निकाली और अपने इष्ट का जयघोष करते हुए आराधना की।

इस दौरान भक्तों का उत्साह व आस्था देखने लायक रही। बहुत से श्रद्धालुओं ने श्री हनुमान के भजन गाकर समां बांध दिया और पूरे माहौल को आध्यात्मिक बना दिया। हनुमान चालीसा पाठ करते हुए भक्तों की आस्था की पराकाष्ठा देखने को मिली। इस दौरान सभी श्रद्धालुओं में सात्विक प्रसाद का वितरण भी किया गया। जिंदल पार्क में 13 अप्रैल को लगने वाले निशुल्क स्वदेशी चिकित्सा शिविर की तैयारियां भी पूरी कर ली गई हैं।

स्वदेशी जागरण मंच के प्रांतीय प्रचार प्रमुख अनिल गोयल ने बताया कि 13 अप्रैल को स्वदेशी शीतल शरबत पिलाकर बैसाखी पर्व मनाया जाएगा। योग शिविर में डॉ. मुकेश कुमार योग क्रियाओं से परिचय करवाकर उनका अभ्यास करवा रहे हैं। श्री हनुमान जन्मोत्सव के दौरान शिविर संयोजक संजीव शर्मा, सह-संयोजक मोना जैन व विनय असीजा, कार्यक्रम प्रमुख दिनेश चुघ, सह-कार्यक्रम प्रमुख सुमन ऐरन, पुनीत खुराना व सोनिया श्योदान, योग प्रकल्प प्रमुख नरेंद्र वशिष्ट, कार्यक्रम व्यवस्था प्रमुख देवेंद्र अग्रवाल आदि मौजूद थे।

उकलाना। नवनिर्वाचित दायित्वधारियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

भारत विकास परिषद के पदाधिकारियों ने किया पद ग्रहण

उकलाना। भारत विकास परिषद् विकास रत्न शाखा उकलाना में मासिक बैठक एवं नव निर्वाचित दायित्वधारियों का शपथ ग्रहण करवाया गया। बैठक गौरव गुप्ता एवं नीरज बंसल द्वारा आयोजित की गई। पुण्यकीर्ति शर्मा को अध्यक्ष पद व योगेश गर्ग को कोषाध्यक्ष बनाया गया। इसके अलावा सुनील गर्ग को सचिव पद की जिम्मेदारी दी गई। शपथ ग्रहण कार्यक्रम में क्षेत्रीय संगठन महामंत्री जियालाल बंसल भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर संस्थापक एवं प्रथम अध्यक्ष कृष्ण चंद्र शर्मा, पूर्व अध्यक्ष अशोक गर्ग, महेंद्र दहमनिया, विनोद गोयल, गौरव गुप्ता, निहाल सिंह बरड़, संजय गुप्ता, रमेश गुप्ता, पुण्यकीर्ति शर्मा, योगेश गर्ग, नवीन जैन, अंकुर गर्ग, नीरज बंसल, राजेश ढ़लोईया, पवन गोयल, राजेश बंसल, डॉ. राजेश सिंगला, डॉ. अनिल गोयल, रवि बिश्नोई, राजीव मित्तल, संजय बंसल, सुनील गर्ग उपस्थित रहे।

एमआईएस पोर्टल एवं यू डाइस पंजीकृत प्राइवेट स्कूलों की मांग पर ठोस निर्णय लें सीएम : शर्मा

अनिल शर्मा सातरोड़िया

हिसार। एमआईएस पोर्टल एवं यू डाइज पंजीकृत तय प्राइवेट स्कूल संघ के अध्यक्ष अनिल शर्मा सातरोडिया ने उपरोक्त श्रेणी के प्राइवेट स्कूलों की मांग उठाते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से गुहार लगाई है। उन्होंने कहा कि हरियाणा में लगभग 700 ऐसे स्कूल हैं जो पिछले कई सालों से शिक्षा निदेशालय हरियाणा द्वारा दिए गए स्कूल कोड, एमआईएस पोर्टल पंजीकृत एवं यू डाइस कोड के साथ जिला शिक्षा अधिकारी के निर्देशानुसार कार्य करते हुए लगभग 85 हजार गरीब बच्चों को बहुत ही कम फीस में अच्छी शिक्षा देने का काम कर रहे हैं। इसके बावजूद हर वर्ष हरियाणा भर में जिला शिक्षा अधिकारियों एवं जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी द्वारा स्कूलों को बंद करने का नोटिस देने का काम किया जाता है जिस कारण इन स्कूल संचालकों पर हमेशा तलवार लटकती रहती है।

हिसार। संविधान की प्रस्तावना की शपथ लेते स्वयंसेवक। फोटो : हरिभूमि

स्वयंसेवकों ने संविधान की प्रस्तावना की शपथ ली

हिसार। छाजूराम मैमोरियल जाट कॉलेज हिसार में अंबेडकर जयंती की पूर्व संध्या पर एनएसएस स्वयंसेवकों द्वारा संविधान की प्रस्तावना की शपथ ली गई। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. नेहा ढांगी ने विद्यार्थियों को डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन एवं संविधान निर्माण में उनके योगदान की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि डॉ. अंबेडकर ने लोगों को समान अधिकार दिलाने के लिए जीवन पर्यंत प्रयास किए। संविधान निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के रहते सभी वर्गों के हितों का सरंक्षण संभव हो पाया। स्वयंसेवकों को डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पुस्तक एनीहिलेशन ऑफ कास्ट से दृष्टांत भी पढ़कर सुनाए गए। इस अवसर पर एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुनील कुमार एवं डॉ. कृष्ण लाल भी उपस्थित रहे।

राजकीय बहुतकनीकी के छह विद्यार्थियों का चयन

हिसार। चयनित विद्यार्थी संस्थान प्रिंसिपल डॉ. सुनील गाबा व अन्य के साथ। फोटो : हरिभूमि

हिसार। गुरु दक्ष राजकीय बहुतकनीकी के 6 विद्यार्थियों का मेग ब्रोस यार्न और फिलामेंट कंपनी में कैंपस सेलेक्शन के माध्यम से चयन किया गया है। चयन प्रक्रिया में टैक्सटाइल प्रोसेसिंग और टैक्सटाइल टेक्नोलॉजी के 35 विद्यार्थियों ने भाग लिया था। लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के बाद, टैक्सटाइल टेक्नोलॉजी के 4 विद्यार्थियों और टैक्सटाइल प्रोसेसिंग के 2 विद्यार्थियों का चयन किया गया। चयनित विद्यार्थियों में टैक्सटाइल प्रोसेसिंग के अंकिता वर्मा और आदर्श कुमार यादव और टैक्सटाइल टेक्नोलॉजी के अनीस कुमार, बिट्टू, राहुल तिवारी और प्रिंस शामिल हैं। संस्थान प्रिंसिपल डॉ. सुनील गाबा, टीपीओ पारितोष परासर व पूर्व टीपीओ डॉ. मुकेश बंसल ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी।

एक ओंकार सतनाम महासत्संग आज, तैयारियां पूरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

ओशो ध्यान उपवन में शुरू हुए तीन दिवसीय एक ओंकार सतनाम ध्यान शिविर में साधकों के उमड़ने का सिलसिला जारी है। देशभर के विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे साधकों ने ध्यान का अभ्यास किया और गुरु नानक जी की बाणी पर आधारित प्रवचन सुने।

पठानकोट से पहुंचे आचार्य चंद्रशेखर ने एक ओंकार सतनाम की विस्तृत व्याख्या करते हुए इसका महत्व समझाया। उन्होंने बताया कि गुरु नानक देव जी ने उस परम पिता परमात्मा को एक मानते हुए उसकी शरण में जाने का आह्वान किया है। इस अवसर पर स्वामी संजय ने बताया कि 13 अप्रैल को सिरसा रोड स्थित ओशो ध्यान उपवन में आयोजित होने वाले महासत्संग की समस्त तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। उन्होंने बताया कि महासत्संग से पहले गीत-संगीत की सुर लहरियों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इसके उपरांत प्रातः 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक ओशो के छोटे भाई स्वामी शैलेंद्र सरस्वती व मां अमृत प्रिया एक ओंकार सतनाम महासत्संग करेंगे।

हिसार। ओशो ध्यान उपवन में चल रहे तीन दिवसीय ध्यान शिविर में उपस्थित साधक।

हिसार। नागरिक एवं उड्डयन व निकाय मंत्री विपुल गोयल को स्मृति चिंह भेंट करते संजय डालमिया। फोटो : हरिभूमि

हिसार से पहली वाणिज्यिक उड़ान अयोध्या के लिए रवाना होगी : विपुल गोयल

हिसार। नागरिक एवं उड्डयन व निकाय मंत्री विपुल गोयल ने कहा कि 14 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हरियाणा दौरे पर रहेंगे। इस ऐतिहासिक दिन पर प्रदेशवासियों को अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाओं की सौगात मिलने जा रही है। मंत्री गोयल नगर निगम के नवनिर्वाचित पार्षद संजय डालमिया व अग्रवाल सेवा समिति अर्बन स्टेट- 2 के सदस्यों द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह को संबोधित करते रहे थे। नागरिक एवं उड्डयन ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी हिसार एयरपोर्ट से अयोध्या के लिए उड़ान सेवा का उद्घाटन करेंगे। इस अवसर पर पहली वाणिज्यिक उड़ान अयोध्या के लिए रवाना होगी, जिससे श्रद्धालु सीधे भगवान रामलला के दर्शन करने जा सकेंगे। इसके अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक रैली को सम्बोधित करेंगे। इस मौके पर नवनिर्वाचित पार्षद संजय डालमिया ने मंत्री विपुल गोयल को स्मृति चिंह भेंट किया। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी, विधायक रणधीर पनिहार, भाजपा के प्रदेश महामंत्री सुरेंद्र पूनिया, नगर निगम मेयर प्रवीण पोपली, हांसी जिला अध्यक्ष अशोक सैनी, जगदीश जिंदल, जय कुमार बंसल प्रधान आदि उपस्थित थे।

ईश्वर को यदि देखना चाहते हो तो ईश्वर की बनी हुई सृष्टि को देखिए : स्वामी सच्चिदानंद

हिसार। आर्य समाज मॉडल टाऊन में आयोजित वेद कथा में प्रवचन देते स्वामी सच्चिदानंद महाराज व उपस्थित श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

हिसार। आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में आर्य समाज, मॉडल टाउन में चल रही वेद कथा के चतुर्थ दिवस प्रातःकाल किए गए हवन-यज्ञ में एडवोकेट राज वर्मा, सुधींद्र, कर्मवीर व सुभाष आर्य ने यजमान के रुप में भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सूर्यदेव वेदांशु ने प्रभु की राह पर नियति यह चलने ही नहीं देती, संभल कर भी मैं गिर जाता संभलने ही नहीं देती... भजन सुना कर श्रोताओं को मंत्र मुक्त कर दिया। जयपुर से आए स्वामी सच्चिदानंद ने वेद मंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि ईश्वर को यदि देखना चाहते हो तो ईश्वर की बनी हुई सृष्टि को देखिए। सृष्टि की एक-एक रचना को देखिए, रचनाकार की अनुभूति होगी। रचनाओं को देखकर के रचनाकार की शक्ति, सामर्थ के बारे में पता चलेगा। इन आंखों से हम गुणों को देख सकते हैं, गुणी को नहीं। रचनाओं को देख सकते हैं, रचनाकार को नहीं। भजनोपदेशिका सुकीर्ति आर्या ने किसी गिरते को उठाए तो कोई बात बने, किसी रोते को हंसाए तो कोई बात बने, कांटे राहों में बिछाना बड़ी बात नहीं, फूल राहों में बिछाए तो कोई बात बने... भजन सुना कर श्रोताओं को आनंददित कर दिया। इस अवसर पर आर्य समाज से जगदीश प्रसाद आर्य, वीरेंद्र आर्य, लालबहादुर खोवाल एडवोकेट, पवन रावलवासिया, सुभाष आर्य, वेद प्रकाश आर्य, सुरेन्द्र बेरवाल, मदन वासुदेवा, संजीव भाटिया, अशोक गौतम, अजमेर सिंह, ईश्वर सिंह पूनिया, रामशरण बैनीवाल, सावित्री, निर्मला, उमा अग्रवाल, कंचन डुडेजा, सुमन बत्रा, साधना मेहता, ललिता शास्त्री, राज वर्मा आदि भी उपस्थित रहे।

विद्यालय की चेयरपर्सन डॉ. एकता सिंधु ने बच्चों के प्रयासों की सराहना की

इंडस आरपीएस पब्लिक स्कूल में धूमधाम से मनाया बैसाखी पर्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

इंडस आरपीएस पब्लिक स्कूल में शनिवार को बैसाखी पर्व का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित व सरस्वती वंदना से किया गया। इस उत्सव पर कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों द्वारा विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने संभाषण, कविता, गीत तथा नृत्य प्रस्तुतियों के माध्यम से पर्व के महत्व को संजीव किया। छात्रा अक्षिता व गीत ने मंच संचालन का कार्य संभाला। छात्रा आरुषि ने बैसाखी पर्व पर कविता प्रस्तुत करके सबका मन मोह लिया। आरवी और हर्पिता ने अपने भाषण द्वारा बैसाखी पर्व के विषय में विस्तारपूर्वक बताते हुए भारतीय संस्कृति में इस पर्व के महत्व को दर्शाया।

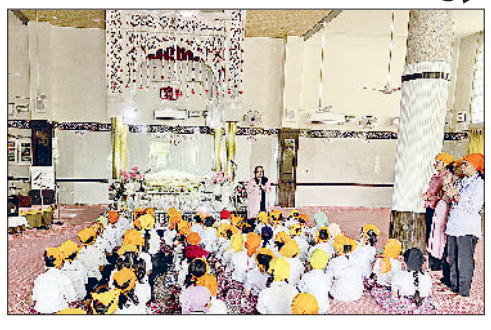

हिसार। गुरुद्वारे में प्रार्थना करते इंडस आरपीएस पब्लिक स्कूल के बच्चे तथा बैसाखी पर्व पर नृत्य प्रस्तुत करती छात्रा।

छात्रा ध्वनि ने ढोल की थाप और पंजाबी संगीत पर पर गिद्दा प्रस्तुत किया।बैसाखी पर्व के अंतर्गत पंजाबी लोक संस्कृति से परिपूर्ण भांगड़ा एवं गिद्दा जैसे नृत्यों ने विद्यार्थियों को झूमने पर मजबूर कर दिया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो समूचा पंजाब रंगमंच पर उतर आया हो। बच्चों ने फसल कटाई के इस पर्व को हर्षोल्लास से मनाते हुए कृषि परंपराओं और भारतीय ग्रामीण संस्कृति की झलक प्रस्तुत की। कक्षा दूसरी से पांचवीं के बच्चों को बैसाखी उत्सव और पंजाबी संस्कृति से परिचित करवाने के लिए गुरुद्वारे का भ्रमण करवाया। गुरुद्वारे में बच्चों ने पहले प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद बच्चों ने गुरुद्वारे में लंगर का प्रसाद भी ग्रहण किया। बच्चे इस अनुभव से काफी खुश थे।

इस अवसर पर विद्यालय की चेयरपर्सन डॉ. एकता सिंधु ने बच्चों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ते हैं, बल्कि हमारे बच्चों को महान व्यक्तित्वों के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

प्रधानाचार्या नीलम राठी ने कहा कि बैसाखी का पर्व हर साल अप्रैल महीने में मनाया जाता है। यह पर्व मुख्य रूप से कृषि से जुड़ा हुआ है और नई फसल की कटाई की खुशी में मनाया जाता है। साथ ही, बैसाखी का पर्व सिख समुदाय के लिए धार्मिक महत्व भी रखता है, क्योंकि इस दिन गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की थी।

नेत्र ऑपरेशन शिविर का 13 लोगों ने उठाया लाभ

हिसार। दिव्यांग पुनर्वास केंद्र में हरि-हर सीड्स के सहयोग से निशुल्क शिविर लगाकर आंखों के सफेद मोतियाबिंद के फ्री ऑपरेशन किए गए। इस शिविर का 13 लोगों ने लाभ उठाया। दिव्यांग केंद्र के अनुभवी व प्रशिक्षित चिकित्सकों ने आधुनिक तकनीक से ऑपरेशन करके नेत्र ज्योति प्रदान की। दिव्यांग केंद्र भारत विकास परिषद की विवेकानंद शाखा द्वारा संचालित किया जा रहा है। इस दौरान कृष्ण गोयल मुंबई वाले, सुरेंद्र कुच्छल, रामनिवास अग्रवाल सीए, ईश्वर गोयल बड़ोपलिया व जगमोहन जिंदल सहित सहित काफी गणमान्य लोग व चिकित्सक उपस्थित रहे। कृष्ण गोयल मुंबई वाले ने दिव्यांग केंद्र का अवलोकन करके यहां संचालित किए जा रहे सामाजिक व स्वास्थ्य संबंधी कार्यों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने आश्वस्त किया कि वे समय-समय पर निशुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर के आयोजन में भरपूर सहयोग करेंगे।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 13 अप्रैल 2025

कवर स्टोरी

डॉ. मोनिका शर्मा

विशेषः अप्रैल-तनाव जागरूकता माह

लाइफ में न रहे टेंशन सीखें स्ट्रेस मैनेजमेंट

आज के दौर में जिस तरह की लाइफस्टाइल हम सब जी रहे हैं, उसमें टेंशन से बचना तो बहुत मुश्किल है। लेकिन हम ऐसा जरूर कर सकते हैं, जिससे टेंशन हम पर हावी न हो। इसके लिए हमें स्ट्रेस मैनेजमेंट सीखना होगा। इसे सीखना बहुत कठिन नहीं है। यहां दिए जा रहे कुछ सजेशंस आपके लिए उपयोगी हो सकते हैं।

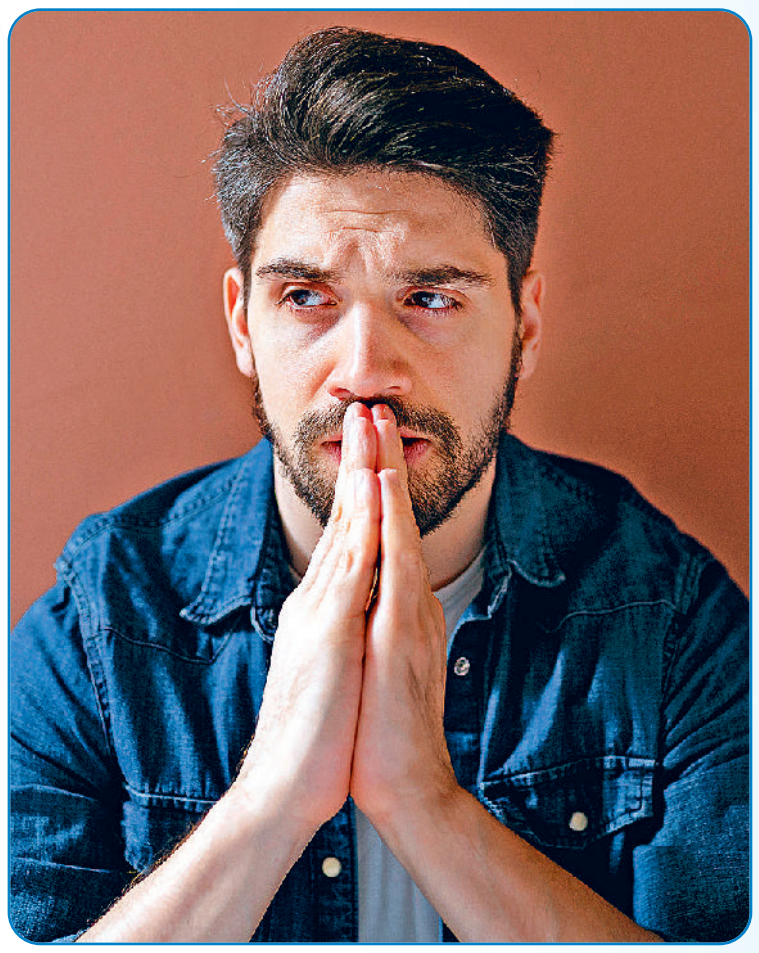

वर्तमान समय में दुनिया के हर हिस्से में स्ट्रेस एक महामारी का रूप ले चुका है। आपा-धापी भरे आज के जीवन में हर आयुवर्ग के लोग तनाव के घेरे में हैं। तनाव की जकड़न बच्चों से लेकर बड़ों तक, बहुत सी शारीरिक और मानसिक समस्याओं का भी शिकार बना रही है। यही वजह है कि तनाव के कारणों, इससे बचाव और उपचार के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 1992 से हर वर्ष अप्रैल को तनाव जागरूकता माह के रूप में मनाया जाता है। महीने भर स्ट्रेस से पैदा हो रहीं समस्याओं पर खुलकर बातचीत करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। तनाव के शिकार लोगों के बढ़ते आंकड़ों को देखते हुए जरूरी हो चला है कि स्ट्रेस मैनेजमेंट के लिए कुछ सहज सरल कदम हर कोई अपनाए।

तनाव को समझिए

सबसे पहले तो तनाव में घिरने की स्थिति को समझना आवश्यक है। आमतौर पर स्ट्रेस के कारण पैदा होने वाली गंभीर बीमारियों के जाल में फंसने से पहले तक स्ट्रेस को कोई परेशानी समझा ही नहीं जाता। जबकि स्ट्रेस के दुष्प्रभावों को समय रहते समझना ही इसके नेगेटिव असर से बचने की राह है। असल में स्ट्रेस को प्रबंधित करने का तरीका जानने के लिए भी इसका शिकार होने की स्थितियों को समझना आवश्यक है। यह समझ तनाव से निपटने के लिए स्वस्थ तरीके ढूंढ़ना भी आसान कर देती हैं। स्ट्रेस के कारण जानकर ही निवारण का मार्ग ढूंढ़ा जा सकता है। इसीलिए सबसे पहले उन ट्रिगर्स को पहचानें, जो तनाव पैदा करते हैं। उन बातों और हालातों को ट्रैक करते रहें, जब आप तनाव महसूस करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में अपनी प्रतिक्रिया पर भी नजर रखें, क्योंकि कई बार अपने गलत रिएक्शन या ओवर रिएक्ट करने से भी अपराधबोध और तनाव बढ़ता है। याद रहे कि खुद अपने मन को विचलित करने वाली स्वास्थ्य समस्या के कारणों को समझना उसके इलाज की राह बहुत आसान बना देता है।

स्वस्थ-सकारात्मक जीवनचर्या

जिंदगी की जुड़ी भाग-दौड़ के अलावा लाइफस्टाइल से जुड़ी गलतियां भी तनाव के घेरे में लाने का कारण बन रही हैं। सधी हुई दिनचर्या से कमोबेश हर उम्र के लोग दूर हुए हैं। जबकि समय पर काम ना निपटाने से लेकर सोने-जागने का सही रूटीन न रखने जैसी आम सी बातें भी इंसान के मन को स्ट्रेस का शिकार बनाती हैं। अस्त-व्यस्त रहना, अनचाहा सामान जमा करना, खुद अपनी चीजों की देखभाल न करना, नींद पूरी न होना, बुरी लत या कसरत ना करना। सब कुछ मन पर एक अनचाहा सा बोझ बढ़ाने वाला परिवेश बनाकर स्ट्रेस का कारण बन जाते हैं। तनाव की जकड़न वाली गंभीर स्थितियों में डॉक्टर की सलाह लेना आवश्यक है। संतुलित जीवनशैली, स्ट्रेस के जाल में फंसने ही नहीं देती। साथ ही अनुशासित जीवनशैली हमारे विचारों को भी सकारात्मक दिशा देती है। पॉजिटिव सोच, तकलीफदेह परिस्थिति में भी 'सब खत्म हो गया', 'अब कुछ नहीं हो सकता' जैसे नकारात्मक विचारों से बचाती है। असल में आशावादी मन, जीवन के हर उतार-चढ़ाव में एक नयापन ढूंढ़ता है। यह सोच कभी तनाव के घेरे में नहीं आने देती।

जीवन से जुड़िए

आज के दौर में स्क्रीन में गुम रहना हो या चाहे-अनचाहे खुद तक सिमट जाने की प्रवृत्ति, अकेलापन और सामाजिक जीवन से दूरी तनाव के सबसे बड़े कारणों में शामिल हैं। इंसान का जीवन भावनाओं और सामाजिक संबंधों से गहराई से जुड़ा हुआ है। अपनेपन से पोषण पाता है। स्नेह और साथ, मन को सुख देने वाले भाव हैं। यही वजह है कि सामाजिक गतिविधियों का सिमटना तनाव को विस्तार दे रहा है। आज के समय में जिंदगी में एक नीरसता और रूखापन भी आया है। दुनिया भर से जुड़े होने के मुगालते में इंसान खुद अपनी जिंदगी से दूर हुआ है। स्ट्रेस में घिरी मनःस्थिति को साझा करने के लिए भी अधिकतर लोगों के पास कोई विश्वसनीय साथी नहीं होता। जबकि स्ट्रेस मैनेजमेंट का सबसे अहम पहलू ही यही है कि मन-मस्तिष्क की ऊहापोह सुनने या सही सलाह देने के लिए कोई साथी जरूर हो। विश्वसनीय मित्र या परिजन ही ऐसा कर सकते हैं। अपनेपन की यह बुनियाद बनाने के लिए सामाजिक-पारिवारिक मेल-जोल आवश्यक है। *

इस वर्ष की थीम-लीड विद लव

स्ट्रेस प्रॉब्लम को लेकर जागरूकता लाने का एक अहम पहलू मित्रों, परिजनों, सहकर्मियों और पेशेवर लोगों के साथ अपनी मानसिक-भावनात्मक स्थिति के बारे में खुलकर बात करने का परिवेश बनाने से भी जुड़ा है। साथ ही इन दिनों तनाव के घेरे में फंसे अपनों-परायों का संबल बनने की अवेयरनेस लाने के प्रयास भी किए जाते हैं। साल 2025 के लिए तो तनाव जागरूकता माह की थीम ही 'लीड विद लव' है। यह विषय स्ट्रेस की समस्या को लेकर स्वयं अपने और दूसरों के साथ दया, करुणा और सहज स्वीकार्यता के साथ पेश आने पर केंद्रित है। 'प्यार के साथ नेतृत्व करें' का यह विचार तनाव के चलते बहुत सी चुनौतियों से जूझते हुए भी सकारात्मक बने रहने के भाव को पोसने वाला है। कठिनाई के बावजूद जीवन के प्रति सहज बने रहने का संदेश देता है। यह थीम अपने आप के लिए तनाव प्रबंधन हेतु सधी जीवनशैली, संतुलित भोजन, कसरत, योग, मेडिटेशन और खुले संवाद जैसे बदलावों को अपनाने की राह सुझाती है तो दूसरों के मन को समझने के लिए भी सजग करती है।

आधुनिकता, तकनीकी निर्भरता और स्वार्थपरता की वजह से वर्तमान समय में इंसानी समाज के सामने नैतिकता और भरोसे का संकट आ खड़ा हुआ है। बेहतर समाज के लिए जरूरी है कि इसके ग्राफ को गिरने से बचाए रखा जाए।

बेहतर समाज के लिए न गिरने दें नैतिकता-भरोसे का ग्राफ

सोशल बिहेवियर

यशोधरा भटनागर

कहते हैं, शेयर बाजार में कब कौन-सा स्टॉक ऊपर जाएगा और कौन-सा औंधे मुंह गिरेगा, यह कोई नहीं बता सकता। ठीक वैसे ही आजकल इंसानों का भी हाल हो गया है। किसी पर भरोसा करो तो हो सकता है कि वह अगले ही पल आपको ठगने का प्लान बना रहा हो। रिश्तों और भरोसे की कीमतें इस कदर अस्थिर हो गई हैं कि कौन कब नैतिकता के बाजार में दिवालिया हो जाए, इसका कोई भरोसा नहीं।

बदल गया है नजरिया: पहले के जमाने में इंसान अपने चरित्र और नैतिकता से पहचाना जाता था, लेकिन अब यह पहचान उसके बैंक बैलेंस, सोशल मीडिया स्टेटस और अवसरवादी सोच पर आधारित हो गई है। ईमानदारी और सच्चाई के शेयर दिन-ब-दिन गिरते जा रहे हैं, जबकि स्वार्थ, धोखाधड़ी और अवसरवाद के स्टॉक्स बुल मार्केट में है। अब रिश्ते भी शेयर बाजार की तरह हो गए हैं। अगर आपका कोई मित्र या रिश्तेदार आपसे जुड़ा हुआ है, तो यह मत समझिए कि वह आपके अच्छे स्वभाव और ईमानदारी की वजह से है। हो सकता है कि उसने सिर्फ इसलिए आपका साथ पकड़ा हो, क्योंकि वह आपसे कोई मुनाफा निकालना चाहता हो। जैसे ही उसे कोई बेहतर 'इन्वेस्टमेंट ऑप्शन' मिलेगा, वह अपना सारा इमोशनल कैपिटल निकाल कर कहीं और लगा देगा। आजकल दोस्ती और रिश्ते भी आई.पी.ओ. (इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग) की तरह होते हैं। पहले बड़े-बड़े वादे किए जाते हैं, भरोसे के लुभावने विज्ञापन दिए जाते हैं, और जैसे ही लोग इसमें निवेश करते हैं, धीरे-धीरे हकीकत सामने आने लगती है। कई दोस्त और रिश्तेदार सिर्फ तब तक साथ रहते हैं, जब तक उनकी 'रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट' अच्छी बनी रहती है। जैसे ही उन्हें लगता है कि अब यहां कोई फायदा नहीं बचा, वे अपने शेयर बेचकर कहीं और चले जाते हैं।

दिखावा हुआ महत्वपूर्ण: इस नए दौर में दिखावा ही असली पूंजी बन गया है। लोग नैतिकता और ईमानदारी को कर्ज में डूबा हुआ शेयर मानते हैं, जबकि तड़क-भड़क और चालाकी का ग्राफ ऊपर चढ़ता जा रहा है। अगर आप सीधा-सादा जीवन जीते हैं और सच्चाई में विश्वास रखते हैं, तो आपको पुराने जमाने का 'लो वैल्यू स्टॉक' मान लिया जाएगा। लेकिन अगर आप थोड़े घमंडी, थोड़े धोखेबाज और बहुत बड़े दिखावटी हैं, तो आपको 'हाई ग्रोथ स्टॉक' माना जाएगा।

कम हुआ भरोसे का मान: आज की दुनिया में भरोसे का इंडेक्स इस कदर गिर चुका है कि आज किसी की बातों पर यकीन करना ही जोखिम भरा हो गया है। वायदा कारोबार की तरह, लोग बड़े-बड़े वादे तो कर लेते हैं, लेकिन जब डिलीवरी देने का समय आता है, तो 'मार्केट क्रैश' हो जाता है। कई दोस्त और रिश्तेदार इस दौर के 'इनसाइडर ट्रेडर' बन चुके हैं- बाहर से मासूम लगते हैं, लेकिन अंदर ही अंदर आपकी कीमत गिराने की साजिशें चल रही होती हैं। आजकल जब कोई आपसे बहुत मीठा बोलता है, तो यह समझने में देर नहीं लगती कि या तो वह आपसे कुछ उधार लेना चाहता है या फिर कोई और फायदा उठाने के लिए पास आ रहा है। यह दौर वही है, जहां दोस्ती भी 'मार्केट सिचुएशन' देखकर बनाई और तोड़ी जाती है।

विश्वसनीयता का संकट: सवाल है आज की दुनिया में नैतिकता, सच्चाई और अच्छाई का मूल्य आखिर इतना कम क्यों हो गया है? ऐसा नहीं है कि यह दुनिया शुरू से ही ऐसी थी। पहले लोगों की पूंजी उनका चरित्र हुआ करता था। लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। अब ईमानदार इंसान को 'अनप्रॉफिटेबल इन्वेस्टमेंट' मान लिया जाता है। किसी की मदद कर दो तो लोग सोचने लगते हैं कि इसमें आपकी क्या चाल है! आज के दौर में अगर आप बिना किसी स्वार्थ के किसी की मदद कर दें, तो सामने वाला शक की नजरों से देखने लगता है। लोग भरोसे की डीलिंग में इतने बार ठगे जा चुके होते हैं कि अब जल्दी किसी पर विश्वास करने से डरते हैं।

बनी रहे रिश्ते-भरोसे की गरिमा: अगर इंसान इसी राह पर चलता रहा, तो वह दिन दूर नहीं जब नैतिकता और मूल्यों की बाजार में कोई खरीद-फरोख्त नहीं बचेगी। लोग केवल दिखावे और मुनाफे के स्टॉक्स में निवेश करेंगे, और इंसानियत का सेंसेक्स हमेशा के लिए क्रैश हो जाएगा। इसलिए जरूरी है कि हम सिर्फ मुनाफे और अवसर के व्यापारी न बनें, बल्कि ऐसे निवेशक बनें जो रिश्तों और भरोसे के ब्लू-चिप स्टॉक्स में लॉन्ग-टर्म इन्वेस्टमेंट करें। तभी समाज का शेयर बाजार स्थिर रहेगा और नैतिकता का ग्राफ फिर से ऊपर जाएगा। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

शैलेंद्र का गीतों भरा जीवन

अपने छोटे से जीवन में ही गीतकार शैलेंद्र ने ऐसे यादगार और शानदार गीत रचे, जो आज भी लोगों की जुबान पर हैं। उनके फिल्मी, गैर फिल्मी गीतों के साथ ही उनके जीवन के तमाम अनछुए पहलुओं पर रोशनी डालती है किताब 'सजनवा बैरी हो गये हमार-गीतकार शैलेंद्र का जीवन और लेखन', जिसे लिखा है, चर्चित फिल्म समीक्षक और लेखक जय सिंह ने। इस किताब से गुजरते हुए हम शैलेंद्र के जीवन में आए तमाम उतार-चढ़ावों से रूबरू हो सकते हैं। परिश्रम से लिखी गई इस किताब में शैलेंद्र के जीवन से जुड़े कई रोचक और मार्मिक किस्सों को पूरी प्रामाणिकता के साथ संजोया गया है। जीवन के हर रंग और गहन दर्शन को सरल शब्दों में पिरोने वाले शैलेंद्र के बारे में इरशाद कामिल ने पुस्तक की भूमिका में सही ही लिखा है, 'शैलेंद्र शब्दों का शिल्प जानता था, कविता की कला जानता था, भावनाओं के सागर की गहराई जानता था और लोगों के दिलों तक पहुंचने का रास्ता जानता था।' *

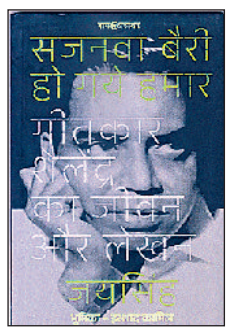

पुस्तकः सजनवा बैरी हो गये हमार, लेखकः जय सिंह, मूल्यः 250 रुपए, प्रकाशकः वाम प्रकाशन, नई दिल्ली

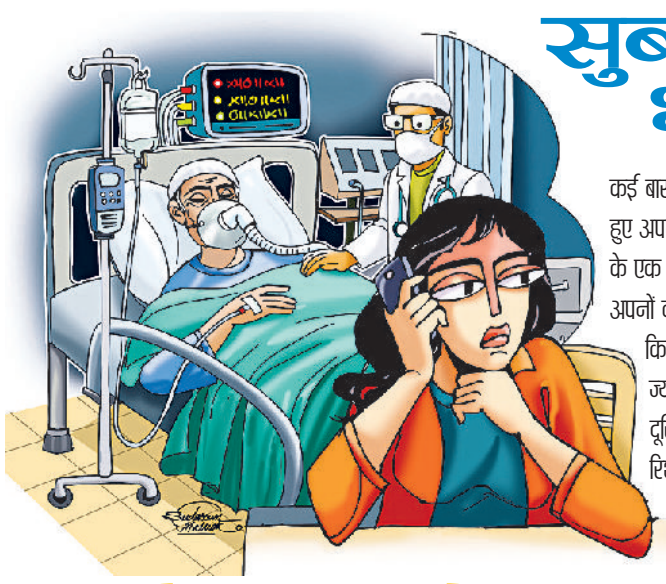

सुबह का भूला

कई बार हम किसी दंभ में जीते हुए अपनों से दूर हो जाते हैं। उम्र के एक पड़ाव पर आकर हमें अपनों की जरूरत महसूस होती है, किसी विपदा में तो और भी ज्यादा, लेकिन तब तक बहुत दूरियां बन चुकी होती हैं, रिश्ते मुरझा चुके होते हैं। जीवन की विसंगति को प्रकट करती कहानी।

कहानी / संजय मृदुल

फाइव स्टार होटल जैसा बड़ा हॉस्पिटल, लॉबी में भीड़-भाड़ के बीच कॉफी शॉप की एक टेबल पर अल्पना अकेली बैठी थी। कॉफी से उठता धुआं अल्पना की आंखों में भर रहा था। अल्पना के चेहरे पर तनाव झलक रहा था। हॉस्पिटल का माहौल ऐसा होता ही है कि अच्छे-भले इंसान का दिल बैठ जाए। वार्डों में कहीं पट्टियों में लिपटे मरीज, किसी बिस्तर पर आंख बंद कर लेटे हुए इंसान के सिर के बाजू रखी मशीन की डरावनी आवाज। आईसीयू के बाहर बैठे परिवारजनों के चेहरे पर किसी आस के भाव, तो किसी की आंखों में निराशा की झलक। अल्पना का यह पहला अवसर था, जब उसे अस्पताल में एक जगह से दूसरी जगह भाग-दौड़ करनी पड़ रही थी।

उधर अल्पना के पिता जी का ऑपरेशन चल रहा था। उन्हें दो दिन पहले सुबह-सुबह सीने में दर्द उठा। अल्पना ने नौकर की मदद से जैसे-तैसे कार से लाकर उन्हें हॉस्पिटल में भर्ती किया। पता चला धमनियों में ब्लॉकेज है। तात्कालिक उपचार और जाने कितने टेस्ट के बाद आज ऑपरेशन हो रहा है।

अल्पना को समझ में नहीं आ रहा है, किसे कॉल करें। खुद पर उसे भरोसा नहीं हो रहा था कि वह सब संभाल पाएगी। जितने भी रिश्तेदार हैं शहर में, उनसे बस औपचारिक-सा रिश्ता है। न वो किसी के घर जाती है, न ही कोई उसके घर आता है। मन में एक ख्याल यह भी आ रहा था कि अकेले ही संभालना ठीक है, क्यों किसी का एहसान लिया जाए।

इसी ऊहापोह में अल्पना ने बैठे-बैठे कुछ लोगों को पिता जी के बारे में बताने के लिए कॉल किया। मामा जी, चाचा जी, मौसा जी जैसे निकट के रिश्तदारों को। सबने आश्चर्य जताया, सहानुभूति दिखाई और जरूरत पड़े तो बताना जैसे वाक्य बोल इतिश्री कर ली। पिता जी के चचेरे भाई को लगा, पैसे न मांग लें तो वो बिना कुछ कहे पैसों का दुखड़ा रोने लगे।

अल्पना को न पैसों की जरूरत थी न ही भीड़ की, उसे लग रहा था कि कोई होता यहां, जो उसकी हिम्मत बढ़ाता, उसका हाथ थामता, उसका अकेलापन बांटता। मुश्किल की इस घड़ी में उसे कोई ऐसा नजर नहीं आया, जो उसका साथ देता।

गलती किसकी है? अल्पना सोचती रही-हम ही तो समय, व्यस्तता के बहाने बनाकर लोगों से दूरी बना लेते हैं। न किसी के घर जाना, न किसी को बुलाना। सोशल मीडिया में भीड़ वाली लिस्ट में लोगों से जुड़े रहना और जीवन में तन्हा रहना, यही आज की कड़वी सच्चाई है।

पद-प्रतिष्ठा के रुआब में अकड़े हुए, शहर-शहर भटकते हुए जीवन बिता देने वाले उसके पिता ने न कभी रिश्ते जोड़े, न परिवार को जुड़ने दिया। मां भी अपने पति की ऐसी आज्ञाकारी थीं कि जैसा पति ने कहा, वही पत्थर की लकीर बन गया। न मायके में संबंध बनाए रखा, न ससुराल में नाता जोड़ पाईं वह। अल्पना सबको बस या तो नाम से जानती थी या पुरानी अलबम में देखी तस्वीरों से। जब पिता जी के रिटायर होने का समय आया तो उन्हें अपना शहर याद आया। आता भी क्यों नहीं, सारा जीवन अलग-अलग शहरों में घूमने के बाद कहीं तो ठिकाना बनाना था। फिर मां भी नहीं हैं, उनके साथ। भाग-दौड़ के बीच एक दिन मां दुनिया छोड़ कर चली गई थीं। हमेशा खामोश रहने वाली मां ने न अपनी बीमारी बताई, न मन में भरा हुआ बारूद खाली कर पाई। पति के अफसर वाले व्यवहार को झेलती-सहती एक रात वह जो सोईं तो सुबह उठी ही नहीं। अल्पना भी पढ़ाई के बाद पुणे में नौकरी कर रही है। छुट्टियों में आती है तो पिता जी के ढेर काम इकट्ठा होते हैं। रिटायर होने के बाद भी उनका व्यवहार अफसर वाला ही है। पिता कम अफसर ज्यादा लगते हैं वह। तीन-चार दिन की छुट्टियों में पिता जी को केवल काम याद रहता है। ऐसा नहीं कि बैठ कर मन की बातें करें, उसके भविष्य की प्लानिंग पूछें। मां को याद कर लें। बचपन में अल्पना सोचती थी, पिता कभी और लोगों की तरह नॉर्मल क्यों नहीं रहते? उसकी सहेलियों के पिताओं की तरह क्यों उसे लाड नहीं करते?

अल्पना को आज लग रहा था, कितनी बड़ी गलती की उन्होंने। सभी इसी शहर में रहते हैं, बुआ, चाचा, उनका परिवार, लेकिन आज कोई उसके साथ नहीं है। किसे फिक्र है उसकी? किसी ने भी उससे नहीं कहा, 'तुम चिंता मत करो, हम हैं ना।'

कॉफी के मग से उठते धुएं के बीच अल्पना सोचती है कि यह पिता जी की गलती सुधारने का सही मौका है। लेकिन यह भी भय था कि सब ऐसा न समझें कि मतलब पड़ा, तो सबसे संबंध जोड़ रही है वह। बड़ी हिम्मत कर अल्पना ने परिवार के व्हाट्स एप ग्रुप में स्थिति बयान की और सबसे माफी मांगते हुए निवेदन किया कि बीती बातों को भुलाकर पिता जी और उसे मौका दें फिर से जुड़ने का। आज जब उसके ऊपर परेशानी आई है तो उसके साथ खड़े हों, उसका हाथ थाम कर उसे संभालें। अब सबकी मर्जी चाहे अवसर दें या ठुकरा दें। अल्पना को उम्मीद थी, जब सुबह का भूला शाम को घर आना चाह रहा है, कोई तो दरवाजा खोलेगा। *

विज्ञापन.....

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आईये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ–

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने डॉ. प्रमोद पहारिया को प्राईड ऑफ एम.पी. अवार्ड दिया।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लेडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?
यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

ट्रीटमेंट में कितना खर्च आता है?
स्पाइन सर्जरी में जहां 3 लाख तक का खर्चा आता है वहीं यह उपचार मात्र 20000 तक में हो जाता है। विदेशों में इसका खर्च 50 गुना तक है।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। अब तक लगभग 7,500 मरीज हमेशा के लिए ठीक हो चुके हैं। यह इंजेक्शन प्रॉब्लम साइट में लगाया जाता है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

@DGN

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

देहली हॉस्पीटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समयः दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466
www.nonsurgicalspinecentre.in

नदियों किनारे लगने वाले बैसाख मेले

मनमोहक धार्मिक-सांस्कृतिक छटा

बैसाख माह में भारत की विभिन्न नदियों के किनारे लगने वाले मेले धार्मिक आस्था, कृषि परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर का संगम हैं। गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी और ब्रह्मपुत्र तट पर लगने वाले ये मेले बहुत धार्मिक महत्व रखते हैं। इन बैसाख मेलों की धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराओं पर एक नजर।

पर्व-परंपरा / धीरज बसाक

भारत में सदियों से जीवन जीने का ढंग महज भौतिक नहीं रहा यानी खाने-पीने और आराम करने तक ही सीमित नहीं रहा। हमारे यहां जीवन प्रकृति, मौसम, धर्म और संस्कृति के खूबसूरत तालमेल का हिस्सा रहा है। यही वजह है कि प्राचीनकाल में हमारे यहां कोई भी मौसम आपदा या परेशानी का सबब नहीं माना जाता था, बल्कि सभी मौसम अपनी-अपनी तरह के उल्लास का स्रोत माने जाते रहे हैं।

प्राकृतिक बदलाव का स्वागत-पर्व: हमारे यहां रोजमर्रा के जीवन में, हर मौसम के साथ दोस्ती करने, उसके साथ जीवंत तालमेल बनाने की बकायदा जीवनशैली रही है। हम हर मौसम का उसके आने के पहले अपनी ऐसी ही धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के जरिए स्वागत करते रहे हैं। उसके साथ तालमेल बिठाते रहे हैं, इस कारण हमारे यहां परंपराओं के नाम पर हर मौसम के अनुकूल उल्लास की चुनी और बुनी हुई गतिविधियां मौजूद रही हैं। यही वजह है कि बसंत ऋतु को विदा देने वाले और घनघोर गर्मियों की तरफ कदम बढ़ाने वाले बैसाख माह में सदियों से हमारे यहां नदियों के किनारे बकायदा उल्लास भरे सांस्कृतिक मेले लगते रहे हैं।

पंजाब में बैसाखी पर गिद्दा करती महिलाएं

बैसाखी मेले पर वृंदावन में कृष्णलीला का मंचन

नदियों किनारे लगते हैं मेले: हालांकि अब इन परंपरा को ढोने वाले मेलों में वह जीवंतता, लोगों की वह चुंबकीय भागीदारी नहीं बची, जो इन्हें उल्लास का कारक बनाती हैं। लेकिन आज भी बैसाख महीने में भारत की सभी बड़ी नदियों के किनारे किसी न किसी रूप में ये बैसाख मेले लगते हैं, जो हमें किसी हद तक हमारी धार्मिक आस्था, कृषि पर्व, और लोक-संस्कृति से जोड़ते हैं।

हरिद्वार-प्रयाग-काशी के बैसाख मेले: हरिद्वार में हर की पैड़ी और सप्तऋषि घाट, प्रयागराज में संगम के किनारे और वाराणसी में वृंदावन घाट, गांव के किनारे बैसाख मेले लगते हैं। गंगा नदी प्राचीन काल से हमारी सनातन आस्था और संस्कृति के केंद्र में रही है। इसके किनारे बसे महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक शहरों हरिद्वार, प्रयागराज और काशी या वाराणसी में हर साल बैसाख माह में मेले लगते रहे हैं। आज भी प्रतीक रूप में बचे इन मेलों में लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं। इनकी प्रमुख गतिविधियों में गंगा आरती, भजन-कीर्तन और दान-पुण्य होता है। इस दौरान यहां संतों के प्रवचन और वैदिक अनुष्ठान भी होते हैं। वाराणसी में विशेष तौर पर क्षेत्रीय हस्तशिल्प, खान-पान, और पारंपरिक वस्त्रों के स्टॉल लगते हैं। यहां मेला मुख्य रूप से पंचकोशी परिक्रमा मार्ग पर स्थित वृंदावन गांव में लगता है, जो वाराणसी शहर से लगभग 10-12 किलोमीटर की दूरी पर है।

मान्यता है कि बैसाख माह में यहां यानी वृंदावन सरोवर घाट में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। यहां बैसाख मेले में स्थानीय कलाकारों द्वारा लोकगीत, नाटक, और भजन-कीर्तन किए जाते हैं। इससे यह एक सांस्कृतिक उत्सव बन जाता है।

पंजाब में बैसाखी मेले: बैसाखी का पर्व, सिख और पंजाबी समुदाय के लिए कई वजहों से बहुत महत्वपूर्ण है। वैसे यह फसल कटाई का त्योहार माना जाता है, लेकिन इसी दिन सन 1699 में गुरु गोविंद सिंह जी ने आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना की थी। इसलिए पंजाब में यह पवित्र पर्व नदियों और सरोवरों के किनारे लगने वाले मेलों के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन गुरुद्वारों में विशेष कीर्तन और लंगर होता है।

तिरुचिरापल्ली में श्रीरंगनाथस्वामी मंदिर

कामाख्या मंदिर में बैसाखी मेले पर उमड़े श्रद्धालु

लोग खुशी व्यक्त करने के लिए पारंपरिक भांगड़ा-गिद्दा नृत्य करते हैं। स्वर्ण मंदिर (अमृतसर) और आनंदपुर साहिब में भव्य आयोजन होते हैं। हालांकि स्वर्ण मंदिर सीधे किसी नदी किनारे स्थित नहीं है। इसके कुछ किलोमीटर दूर कालीबेई और रावी नदी बहती हैं जबकि आनंदपुर साहिब सतलुज की सहायक नदी सिरसा के तट पर स्थित है, जहां बैसाख मेले की खूब रौनक सजती है। बैसाखी का दिन रबी फसल (गेहूं) की कटाई के बाद किसानों के लिए खुशियों का अवसर होता है। किसान नई फसल का उत्सव मनाते हैं।

मथुरा-वृंदावन में बैसाख मेला: विश्राम घाट, मथुरा और कोशी घाट, वृंदावन में आयोजित बैसाख मेलों के दौरान भगवान कृष्ण से जुड़ी कथाओं का मंचन और झांकी निकाली जाती हैं। लोग यमुना नदी में स्नान करते हैं और विशेष पूजा-अर्चना करते हैं।

नासिक का बैसाख मेला: बैसाखी मेला नासिक के पंचवटी क्षेत्र में रामकुंड में आयोजित होता है। श्रद्धालु यहां दूर-दूर से स्नान करने आते हैं। इस पूरे मेले वाले दिन यहां महाराष्ट्र की लोकसंस्कृति के साथ-साथ भजन और कीर्तन का आयोजन होता है।

नर्मदा तट पर मेला: बैसाखी के दिन नर्मदा उद्गम स्थल, अमरकंटक में श्रद्धालु पवित्र नर्मदा नदी में स्नान और धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। बड़े पैमाने पर इस स्नान के लिए यहां देशभर से साधु-संत आते हैं। शाम को नर्मदा नदी की आरती होती है। अमरकंटक के अलावा होशंगाबाद के सेठानी घाट पर भी बैसाखी मेला लगता है।

कावेरी तट पर मेला: बैसाखी के दिन कर्नाटक और तमिलनाडु में बहने वाली पवित्र कावेरी और इसकी सहायक नदियों के किनारे बसे तिरुचिरापल्ली, कुंभकोणम और मैसूर शहर में विशेष बैसाखी मेले आयोजित होते हैं। तिरुचिरापल्ली में स्थित श्रीरंगनाथस्वामी मंदिर में इस दिन विशेष पूजन और उत्सव संपन्न होता है। कुंभकोणम में भी इस दिन पारंपरिक द्रविड़ शैली की भव्य झांकियां निकलती हैं। इसके साथ ही कावेरी के तट पर वैष्णव भक्तों का हुजूम उमड़ता है और भक्ति संगीत की त्रिवेणी बहती है।

ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर बैसाखी मेला: कामाख्या मंदिर, गुवाहाटी में इस मेले के दौरान विशेष अनुष्ठान संपन्न होते हैं। इन अनुष्ठानों में तांत्रिक परंपराओं का पालन होता है। जिसमें असमिया लोक संस्कृति और बिहू नृत्य का प्रदर्शन होता है।

बिहार-झारखंड के बैसाख मेले: बिहार में सोनपुर का और झारखंड में गुमला स्थित रामरेखा धाम का बैसाख मेला बहुत प्रसिद्ध हैं। गंडक और गंगा के संगम में सोनपुर का यह मेला ऐतिहासिक हरिहरनाथ मंदिर से जुड़ा हुआ है। इस मेले में लोकनृत्य, पारंपरिक झूमर नृत्य का विशेष प्रदर्शन होता है। *

सही नहीं हर किसी को अनावश्यक उपदेश देना

दूसरों को उपदेश देना सामान्य मानवीय स्वभाव है। जब से सोशल मीडिया का ट्रेंड बढ़ा है, दूसरों को उपदेश देने वालों की बाढ़ आ गई है। लेकिन ऐसा बार-बार करने से घर के सदस्य हों या बाहर के लोग, आपसे दूरी बनाना शुरू कर सकते हैं।

बिहेवियर

विवेक कुमार

इन दिनों सोशल मीडिया पर हेल्थ रिलेटेड कई इंफ्लूएंसर यह शिकायत कर रहे हैं कि अब लोग उनकी टिप्स पर उतना ध्यान नहीं देते, जितना पहले दिया करते थे। दरअसल, इसकी वजह उनका लगातार उपदेश देते रहना है। यह विभिन्न शोध अध्ययनों से स्पष्ट हो गया है कि लोग एक हद तक ही किसी से ज्ञान ले सकते हैं या उनके उपदेश सुन सकते हैं। एक सीमा के बाद लोग ऊब जाते हैं, क्योंकि हर कोई अपनी सोच और फैसलों में आजादी चाहता है, जबकि उपदेश देने वाला हर हाल में उसे अपना फॉलोअर बनाना चाहता है।

संभव नहीं हमेशा सुनना: उपदेशों में आमतौर पर संवाद एकतरफा हो जाते हैं और सामने वाला सिर्फ सुनने को मजबूर हो जाता है। इसलिए एक न एक दिन वह उपदेशों से दूरी बनाने लगता है। यह बात सिर्फ बाहर ही नहीं घर-परिवार में भी लागू होती है। जिन बच्चों को मां-बाप कुछ न कुछ सिखाते रहते है यानी, उपदेश देते रहते हैं, वे बच्चे अकसर इन उपदेशों से किसी न किसी दिन बगावत कर देते हैं।

सोशल मीडिया से बढ़ा ट्रेंड: ज्यादा उपदेश सुनना किसी को पसंद नहीं होता, यह बात जानने-समझने के बावजूद आज सोशल मीडिया में हर तरफ, हर कोई उपदेश ही देते मिलता है। लोग अब सिर्फ बातें ही नहीं सिखाते बल्कि अपनी बात मनवाने के तमाम तर्क देते हैं, अपनी बताई दिशा में धकेलने का पूरा प्रयास करते हैं। ऐसा करना अनुचित है। लेकिन हमारे इर्द-गिर्द हर क्षेत्र के ढेरों तथाकथित विशेषज्ञ हो गए हैं, जो किसी भी शर्त पर हमारा मार्गदर्शन करने से चूकना नहीं चाहते। ऐसे लोगों के दिलो-दिमाग में हर समय उपदेश कुलबुलाते रहते हैं और वे यही चाहते हैं कि जैसे ही कोई मिले वह उन पर ये उपदेश उड़ेल दें।

हर कहीं मौजूद उपदेशक: आज के दौर में हमारे इर्द-गिर्द ऐसे उपदेशकों की भरमार है। टेलीविजन चैनल पर दिन-रात विशेषज्ञों और मार्गदर्शकों के उपदेश प्रसारित होते हैं। बहुत सारी सेल्फ हेल्प बुक्स हैं, उनमें उपदेशों की भरमार होती है। यहां तक कि बाजार में सब्जी या कोई सामान खरीदने जाएं तो वहां पर भी आपको ऐसे उपदेश सुनने को मिल सकते हैं। मसलन, आपने दुकान वाले को 50 की बजाय 100 रुपए का नोट थमा दिया और वह आपके पैसे वापस करता है तो भी उपदेश के साथ, जो वह ईमानदारी पर देता है और आपको उपदेश पर उसकी सारी बातें सुननी पड़ती हैं। घर आकर आपको लगता है कि कितना अच्छा होता वह आपको 50 रुपए भले वापस न करता, आपको इतने उपदेश तो न सुनने पड़ते।

मिलती है संतुष्टि: उपदेशक बनने में एक संतुष्टि मिलती है। आपने कोई अच्छी किताब पढ़ी या आपको कोई उक्ति कोट करने लायक लगती है तो आप जो कुछ सीखते हैं, उसे दूसरों को भी शेयर करते हैं, ऐसे में आप भी तो उपदेशक ही हुए न! उस समय आपको लगता है कि आप जो कह रहे हैं, वह सही है और आपने ऐसी बात कहकर जीवन में किसी को कुछ तो सिखाया है और आपको भी यह विश्वास हो जाता है कि दिल को अच्छी लगने वाली बातों को हम दूसरों से भी शेयर करें। दूसरों से जब हम शेयर करते हैं और वे भी हमारी बात से सहमत होते हैं तो इससे हमें एक सुख मिलता है।

संतुलन है जरूरी: हम आज ऐसी दुनिया में रह रहे हैं, जहां पर चारों ओर अच्छे विचारों और सलाहों के स्वर गूंज रहे हैं। यह अनुचित तभी होगा, अगर हम जबर्दस्ती दूसरों को उपदेश दें। हम एक-दूसरे को सलाह देते हैं कि हमें किसी भी सवाल का जवाब सबसे पहले खुद से पूछना चाहिए। लेकिन हममें से कितने ऐसे लोग हैं, जो अपनी किसी भी समस्या या प्रश्न के बारे में अपने आपसे पूछते हैं? हम हमेशा उसके समाधान के लिए दूसरों का मुंह ताकते हैं। इसलिए किसी को सलाह देना गलत नहीं है, लेकिन किसी को सही समय पर ही सलाह देनी चाहिए, सही जगह और सही नजरिए के साथ। जरूरत इस बात की है, हमें इसमें संतुलन बनाकर रखना चाहिए। जो आपसे सलाह या मार्गदर्शन मांगे, उसे जरूर दें। लेकिन जिसे आपके उपदेशों में रुचि नहीं है या किसी को अपना फॉलोअर बनाने के लिए दबाव डालना उचित नहीं है। *

टेक्नो ट्रेंड

नरेंद्र शर्मा

अगर आप सोशल मीडिया पर एक्टिव हैं, तो 'घिब्ली स्टाइल' के ट्रेंड से जरूर वाकिफ होंगे। क्या है घिब्ली स्टाइल, यह कहां से शुरू हुआ, क्यों हो रहा इतना वायरल? आप जरूर जानना चाहेंगे।

सोशल मीडिया का नया टाइम पास घिब्ली स्टाइल

इंटरनेट और सोशल मीडिया पर आए दिन कोई-न-कोई फीचर या एप ट्रेंड करता रहता है। ऐसा ही एक ट्रेंड पिछले कुछ दिनों से इंटरनेट की दुनिया में छाया हुआ है, जिसका नाम है-घिब्ली स्टाइल। आपमें से कई लोगों ने अपनी और अपनों की फोटोज को घिब्ली स्टाइल में क्रिएट कर एंज्वॉय भी किया होगा।

क्या है घिब्ली स्टाइल: यह एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित टूल है, जो एडवांस्ड इमेज प्रोसेसिंग तकनीक के माध्यम से तस्वीरों को री-क्रिएट करता है। इस टूल के माध्यम से आप अपनी किसी भी तस्वीर को क्लासिक एनिमेशन स्टाइल तस्वीर में बदल सकते हैं। वैसे मूल 'घिब्ली' का शाब्दिक अर्थ है, रेगिस्तान में चलने वाली गर्म हवा। लेकिन इंटरनेट पर वायरल हो रहे 'घिब्ली स्टाइल' तस्वीरों के ट्रेंड्स को देखते हुए कह सकते हैं कि 'घिब्ली' से आशय हाथ से बनाई गई कार्टून तस्वीरों, समृद्ध जलरंग और एक्रेलिक पेंट्स और डिटेल्ड बैकग्राउंड वाली डिजाइन से है।

कैसे वायरल हुआ यह ट्रेंड: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंपनी 'ओपन एआई' ने 25 मार्च, 2025 को अपने चैट जीपीटी 4 ओ मॉडल में एक नए इमेज जनरेशन फीचर 'घिब्ली स्टाइल' की घोषणा की, जिसके जरिए यूजर्स अपनी तस्वीरों के साथ अनोखे एक्सपेरिमेंट्स कर सकते हैं। सिएटल के सॉफ्टवेयर इंजीनियर ग्रांट स्लैटन ने उसी दिन अपनी पत्नी और डॉगी के साथ समुद्र तट पर ली गई एक तस्वीर को 'घिब्ली' शैली में परिवर्तित करके अपने एक्स एकाउंट पर पोस्ट कर दिया। देखते ही देखते सोशल मीडिया में न केवल इस तस्वीर को लाइक करने वाले लोगों की संख्या लाखों में पहुंच गई, बल्कि लोग खुद भी अपनी तस्वीरें घिब्ली स्टूडियो शैली में जनरेट करके अपलोड करने लगे और इस वजह से इस ट्रेंड की बाढ़ आ गई।

जापानी स्टूडियो की देन: 'घिब्ली' वास्तव में एक जापानी एनिमेशन स्टूडियो का नाम है, जिसे हायाओ मियाजाकी और इसाओ ताकाहाता ने 1985 में स्थापित किया था। इस स्टूडियो ने अपनी अनूठी कला शैली विकसित की है। इस कला शैली की कुछ खासियतें हैं, जैसे यह शैली बेहद भावनात्मक, सजीव और प्रकृति से गहराई से जुड़ी हुई विजुअल्स निर्मित करती है। इसमें अद्भुत कल्पनाशीलता का विस्तार है, जैसे उड़ते हुए महल, बोलते हुए जानवर और ऐसी ही सम्मोहक जादुई दुनिया।

नैतिकता के पैमाने पर घिब्ली: चैट जीपीटी का यह नवीनतम इमेज-जनरेशन फीचर ऐसी तस्वीरें और दृश्य बना रहा है, जो लगता है मानो सीधे 'स्टूडियो घिब्ली' के मालिक मियाजाकी की स्केचबुक से निकले हों। अब एआई टूल्स जैसे मिडजर्नी और डल-ए, इस स्टाइल की नकल करके पलक झपकते ही हू-ब-हू घिब्ली शैली जैसी तस्वीरें बना रहे हैं। एआई टूल्स की ये सटीक कलात्मकता अपनी जगह है, लेकिन सवाल है कि यह नैतिकता की दृष्टि से कितना सही है? क्योंकि घिब्ली स्टूडियो ने कभी किसी एआई को अपने काम से ट्रेनिंग की अनुमति नहीं दी। फिर भी कंपनियां एआई को यह स्टाइल सिखा रही हैं। वास्तव में यह उचित नहीं है। जिन पारंपरिक कलाकारों को यह स्टाइल सीखने में वर्षों लगे, उनकी वर्षों की मेहनत एआई उनसे पलक झपकते छीन रहा है। इससे दुनिया के वास्तविक कलाकारों का भविष्य खतरे में पड़ रहा है।

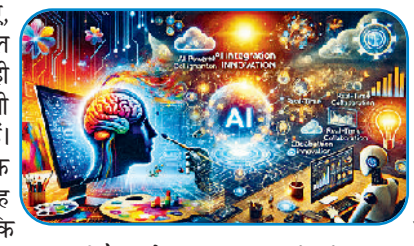

'जब एआई ये सब मुफ्त में बना सकता है, तो मैं किसी कलाकार को क्यों हायर करूं?' लोग यही सोचकर ऐसे क्रिएटिव आर्ट के लिए कलाकारों के बजाय एआई टूल्स की सेवा लेने लगे हैं। लेकिन जरा सोचिए, क्या एक मशीन द्वारा बनाई गई कला भी उतनी ही 'सच्ची' और 'इनसानी' हो सकती है, जितनी किसी इंसान द्वारा बनाई गई? बहरहाल, इन परिस्थितियों से हताश या निराश होने के बजाय हमें नई रचनात्मक दिशाओं की तलाश करनी होगी, जैसे-एआई के साथ मिलकर क्रिएटिविटी को अपनाना। हमें एआई को क्रिएटिविटी में सहयोगी बनाना चाहिए, ऑप्शन नहीं। तभी कला और तकनीक का बैलेंस्ड यूज हो पाएगा। *

हाल में रिलीज हुई फिल्म 'जाट' में सनी देओल अपने जाने-पहचाने एंग्री एक्शन मैन के रोल में दिख रहे हैं। साउथ फिल्मों के डायरेक्टर गोपीचंद मलिनेनी के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म में काम करने के उनके एक्सपीरियंस कैसे रहे? अब तक की अपनी एक्टिंग जर्नी को वे कैसे देखते हैं? फिल्म और करियर से जुड़े कई सवालों के जवाब सनी देओल ने दिए इस बातचीत में।

बतौर एक्टर मेरा करियर अच्छा-खासा चल रहा है: सनी देओल

खास मुलाकात

पूजा सामंत

चार दशक पहले फिल्म 'बेताब' से बॉलीवुड में डेब्यू करने वाले सनी देओल को फिल्म इंडस्ट्री में 42 वर्ष हो चुके हैं। इन दिनों सनी देओल, बीते शुक्रवार को रिलीज हुई फिल्म 'जाट' को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म की कहानी और पटकथा लिखने के साथ ही डायरेक्ट भी किया है साउथ फिल्मों के गोपीचंद मलिनेनी ने। फिल्म में सनी देओल के अपोजिट रेजिना कैसेंड्रा और सैयामी खेर हैं, जबकि रणदीप हुड्डा नेगेटिव रोल में नजर आ रहे हैं। इस फिल्म और करियर से जुड़ी बातें सनी देओल के साथ।

आपने पहली बार साउथ फिल्म मेकर के साथ फिल्म की है, इसकी क्या खास वजह रही?

साउथ फिल्म इंडस्ट्री की कई खासियतें हैं। यहां ज्यादातर आम लोगों के लिए फिल्में बनाई जाती हैं। मनोरंजन के साथ-साथ अच्छी कहानी का भी ध्यान रखा जाता है। गोपीचंद ने जब इस फिल्म की स्टोरी सुनाई, तो मुझे फिल्म की कहानी, इसमें मेरा किरदार बेहद पसंद आया, इसलिए मैंने बिना देर किए इस फिल्म के लिए हामी भर दी।

आप खुद जाट परिवार से ताल्लुक रखते हैं। ऐसे में आप अपनी फिल्म 'जाट' के साथ कैसे खुद को रिलेट करते हैं?

यह सच है कि मैं जाट परिवार से ताल्लुक रखता हूं। लेकिन अपने देश में अमूमन 'जट' यानी किसान को भी 'जाट' कहा जाता है। मैं इस फिल्म में जाट यानी किसान बना हूं। किसान कहीं का हो, उनका खान-पान, रहन-सहन, संस्कृति, जीवन तकरीबन एक-सा होता है। खेती-किसानी से हम जुड़े रहे हैं। इसलिए यह फिल्म और इसमें अपने किरदार से मैं आसानी से रिलेट करता हूं।

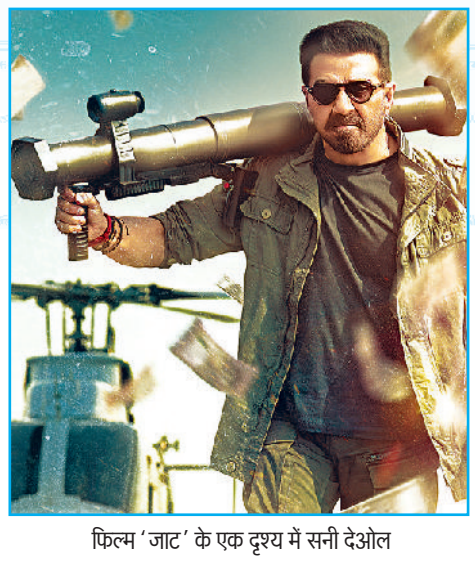

फिल्म 'जाट' के एक दृश्य में सनी देओल

आपने हाल-फिलहाल में यह कहा था कि आप साउथ में सैटल होना चाहते हैं। क्या वाकई ऐसी प्लानिंग है?

साउथ फिल्म इंडस्ट्री का डिसिप्लीन और वर्किंग स्टाइल देखकर मैं सरप्राइज्ड रह गया। 'जाट' साउथ में की मेरी पहली ही फिल्म है। इसका अनुभव बड़ा सुहाना, यादगार रहा। मैंने महसूस किया कि यहां लोग अपने काम को बड़ी गंभीरता से लेते हैं। यही वजह है कि यहां की अधिकांश फिल्में सफल होती हैं। इन्हीं सब कारणों से मैंने मजाकिया अंदाज में यह कह दिया था, मैं अब प्रोफेशनल कारणों से साउथ में बसने वाला हूं। नथिंग सीरियस!

आपने कुछ फिल्में डायरेक्ट भी की हैं, लेकिन इधर कुछ वर्षों से आपने कोई फिल्म डायरेक्ट नहीं की, इसकी क्या वजह है?

मैंने 1999 में 'दिल्लगी' फिर 2016 में 'घायल वंस अगेन' फिर 2019 में 'पल-पल दिल के पास' फिल्मों को निर्देशित किया था। जब भी मैंने डायरेक्शन की बागडोर संभाली, मुझे उन फिल्मों को मना करना पड़ा, जो उस दौरान मुझे ऑफर हुई थीं। मुझे मेरे वेल विशर्स ने यह सलाह दी कि दर्शक आपको बतौर एक्टर सिल्वरस्क्रीन पर देखना चाहते हैं। मुझे लगता है कि एक लीडिंग एक्टर के रूप में मेरा करियर जब अच्छा-खासा चल रहा है तो मुझे उसी पर फोकस करना चाहिए। इसलिए अब मैं डायरेक्शन के बजाय एक्टिंग को तवज्जो दे रहा हूं।

आपके फिल्मी करियर को 42 वर्ष हो चुके हैं, कैसा रहा अब तक का फिल्मी सफर?

बहुत ही अच्छा रहा। मेरी डेब्यू फिल्म 'बेताब' को आज भी लोग भूल नहीं पाए हैं, जबकि इस फिल्म को रिलीज हुए 42 वर्ष हो चुके हैं। मैं अपने करियर का पूरा श्रेय अपने पापा को देना चाहूंगा। अगर उन्होंने मुझे लॉन्च नहीं किया होता तो शायद मेरा एक्टिंग में करियर ही नहीं बनता! मेरे एक्टिंग करियर का दूसरा बड़ा श्रेय मेरे दर्शक, मेरे मेकर्स, मेरे को एक्टर्स सभी को जाता है। कई बार फिल्में नहीं चलीं, लगा अब खत्म हुआ फिल्मी सफर, लेकिन फिर कोई न कोई फिल्म चली और मैं कहता रहा, 'एक मोड़ आया, मैं उत्थे असफलता छोड़ आया' रब दी मेहर बड़ी रही।

आपके प्रति एक डर-सा रहता है लोगों और मीडिया के दिल में, इसकी क्या वजह है?

ऐसा शायद मेरे फिल्मी इमेज की वजह से हुआ है। लेकिन असल जिंदगी में मैं बहुत सॉफ्ट स्पोकन, अच्छे व्यवहार का शख्स हूं। सभी के साथ प्यार से पेश आता हूं। मुझसे मेरे फैंस या मीडिया के लोग डरें, ऐसा मेरा व्यवहार कभी नहीं रहा।

अपनी अपकमिंग फिल्मों के बारे में कुछ बताइए।

आमिर खान प्रोडक्शन की राजकुमार संतोषी निर्देशित 'लाहौर 1947' और जे.पी. दत्ता की 'बॉर्डर 2' आने वाली हैं। इसके अलावा और भी कुछ फिल्मों पर बातचीत चल रही है, वक्त आने पर इस बारे में भी बताऊंगा। *

मेरी पहचान-ढाई किलो का हाथ

जब भी सनी देओल की बात चलती है, 'ढाई किलो का हाथ' का जिक्र जरूर आता है। इस बारे में पूछे जाने पर सनी कहते हैं, 'इस डायलॉग के हिट होने के बाद जब हर जगह, हर कहीं 'ढाई किलो का हाथ' मेरी पहचान से जुड़ने लगा, तो मैं इससे ईरिटेट हो जाता था। लेकिन बाद में मुझे अहसास हुआ कि मेरे फैंस को मेरी यह पहचान पसंद है, तो मैंने भी इसे 'अडॉप्ट' कर लिया। अब मुझे बुरा लगना बंद हो गया है। अब तो मेरे करियर, मेरी पहचान का हिस्सा बन चुका है-ढाई किलो का हाथ।